elect, in the manner as directed by the Chairman, one Member from amongst the Members of the House to be a member of the Council of the Institutes."

The question was put and the motion was adopted.

DISPENSING WITH ZERO HOUR AND QUESTION HOUR

MR. CHAIRMAN: As it was announced by the Deputy Chairman earlier, there will not be Question Hour or any other issues except the Special Mentions which will be taken up after the scheduled Business of the House is concluded.

Farewell to the Chairman, Rajya Sabha; hon. Prime Minister.

FAREWELL TO THE CHAIRMAN

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय सभापति जी, आज हम सब इस सदन के सभापति और देश के उपराष्ट्रपति, आदरणीय श्री एम. वेंकैया नायडु जी को उनके कार्यकाल की समाप्ति पर उन्हें धन्यवाद देने के लिए उपस्थित हुए हैं। यह इस सदन के लिए बहुत ही भावुक पल है। सदन के कितने ही ऐतिहासिक पल आपकी गरिमामयी उपस्थिति से जुड़े हुए हैं, फिर भी अनेक बार आप कहते रहे हैं, 'I have retired from politics, but not tired of public life.' इसीलिए इस सदन को नेतृत्व देने की आपकी जिम्मेदारी भले ही पूरी हो रही हो, लेकिन आपके अनुभवों का लाभ भविष्य में सुदीर्घ काल तक देश को मिलता रहेगा। हम जैसे अनेक सार्वजनिक जीवन के कार्यकर्ताओं को भी मिलता रहेगा।

आदरणीय सभापति महोदय, आजादी के अमृत महोत्सव में आज जब देश अपने अगले 25 वर्षों की नई यात्रा शुरू कर रहा है, तब देश का नेतृत्व भी एक तरह से एक नए युग के हाथों में है। हम सब जानते हैं कि इस बार हम एक ऐसा 15 अगस्त मना रहे हैं, जब देश के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, स्पीकर, प्रधान मंत्री, सब के सब वे लोग हैं, जो आजाद भारत में पैदा हुए हैं और सब के सब बहुत ही साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं। मैं समझता हूँ उसका अपना एक सांकेतिक महत्व है, साथ में देश के नए युग का एक प्रतीक भी है।

आदरणीय सभापति महोदय, आप तो देश के एक ऐसे उपराष्ट्रपति हैं, जिसने अपनी सभी भूमिकाओं में हमेशा युवाओं के लिए काम किया है। आपने सदन में भी हमेशा युवा सांसदों को आगे बढ़ाया और उन्हें प्रोत्साहन दिया। आप लगातार युवाओं के साथ संवाद के लिए यूनिवर्सिटीज़ और इंस्टीट्यूशन्स लगातार जाते रहे हैं। नई पीढ़ी के साथ आपका एक निरंतर कनेक्ट बना हुआ है, और युवाओं को आपका मार्गदर्शन भी मिला है और युवा भी आपसे मिलने के लिए हमेशा उत्सुक रहे हैं। इन सभी संस्थानों में आपकी लोकप्रियता भी बहुत रही है। मुझे बताया गया कि वाइस-

प्रेज़ीडेंट के रूप में आपने सदन के बाहर जो भाषण दिए, उनमें करीब-करीब 25 प्रतिशत युवाओं के बीच में रहे। यह भी अपने आप में एक बहुत बड़ी बात है।

आदरणीय सभापति महोदय, व्यक्तिगत रूप से मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मैंने बड़े निकट से आपको अलग-अलग भूमिकाओं में देखा है। आपकी बहुत सारी भूमिकाएँ ऐसी भी रहीं, जिनमें मुझे आपके साथ कंधे से कंधा मिला कर कार्य करने का भी सौभाग्य मिला है। पार्टी कार्यकर्ता के रूप में आपकी वैचारिक प्रतिबद्धता हो, एक विधायक के रूप में आपका कामकाज हो, सांसद के रूप में सदन में आपकी सक्रियता हो, भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप में आपका सांगठनिक कौशल्य और लीडरशिप की बात हो, कैबिनेट मंत्री के रूप में आपकी मेहनत, नवाचार का आपका प्रयास और उससे प्राप्त सफलताएं हों, ये सब देश के लिए बहुत उपकारक रहे हैं। उपराष्ट्रपति और सदन के सभापति के रूप में आपकी गरिमा और आपकी निष्ठा, मैंने आपको अलग-अलग जिम्मेदारियों में बड़े लगन से काम करते हुए देखा है। आपने कभी भी किसी भी काम को बोझ नहीं माना, हर काम में आपने नये प्राण फूंकने का प्रयास किया है। आपका जज़्बा, आपकी लगन हम लोगों ने निरंतर देखी है। मैं इस सदन के ज़रिए प्रत्येक माननीय सांसद और देश के हर युवा से कहना चाहूंगा कि वो समाज, देश और लोकतंत्र के बारे में आपसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। 'लिसनिंग, लर्निंग' लीडिंग', 'कनेक्टिंग, कम्युनिकेटिंग, चेंजिंग' और 'रिफ्लेक्टिंग, रीकनेक्टिंग', जैसी किताबें आपके बारे में बहुत कुछ बताती हैं। आपके ये अनुभव हमारे युवाओं को गाइड करेंगे और लोकतंत्र को मज़बूत करेंगे।

आदरणीय उपराष्ट्रपति महोदय, आपकी किताबों का जिक्र मैंने इसलिए किया, क्योंकि उनके टाइटल में आपकी वह शब्द प्रतिभा झलकती है, जिसके लिए आप जाने जाते हैं। आपके वन लाइनर्स - विट लाइनर्स होते हैं और विन लाइनर्स भी होते हैं, यानी उसके बाद कुछ और कहने की जरूरत ही नहीं रह जाती। Your each word is heard, preferred, revered and never countered. कैसे कोई अपनी भाषा की ताकत के रूप में और सहजता से इस सामर्थ्य के लिए जाना जाए, और उस कौशल से स्थितियों की दिशा को मोड़ने का सामर्थ्य रखे, सचमुच में आपकी इस सामर्थ्य को मैं बधाई देता हूं।

साथियो, हम जो भी कहते हैं, वह महत्वपूर्ण तो होता ही है, लेकिन जिस तरीके से कहते हैं, उसकी अहमियत ज्यादा होती है। किसी भी संवाद की सफलता का पैमाना यही है कि उसका गहरा इम्पैक्ट हो, लोग उसे याद रखें और जो भी कहें, उसके बारे में लोग सोचने के लिए मजबूर हों। अभिव्यक्ति की इस कला में वेंकैया जी की दक्षता, इस बात से, सदन में भी और सदन के बाहर भी देश के सभी लोग भली-भांति परिचित हैं। आपकी अभिव्यक्ति का अंदाज़ जितना बेबाक है उतना ही बेजोड़ भी है। आपकी बातों में गहराई भी होती है और गंभीरता भी होती है। वाणी में विट भी होता और वेट भी होता है, warmth भी होती है और विज़डम भी होती है। आपका संवाद का तरीका ऐसे ही किसी बात के मर्म को छू जाता है और सुनने में मधुर भी लगता है।

आदरणीय सभापति महोदय, आपने दक्षिण में छात्र राजनीति करते हुए अपना राजनीतिक सफर शुरू किया था। तब लोग कहते थे कि जिस विचारधारा से आप जुड़े थे, उसका और उस पार्टी का निकट भविष्य में तो दक्षिण में कोई सामर्थ्य नजर नहीं आता है, लेकिन आप एक सामान्य विद्यार्थी कार्यकर्ता से यात्रा शुरू करके, और दक्षिण भारत से आते हुए उस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के शीर्ष पद पर पहुंचे, यह आपकी एक अविरक्त विचारनिष्ठा, कर्तव्यनिष्ठा और कर्म के

प्रति समर्पण भाव का प्रतीक है। अगर हमारे पास देश के लिए भावनाएं हों, बात कहने की कला हो, भाषाई विविधता में आस्था हो, तो भाषा और क्षेत्र हमारे लिए कभी भी दीवार नहीं बनते हैं, यह आपने सिद्ध किया है।

आदरणीय सभापति महोदय, आपकी कही एक बात बहुत लोगों को याद होगी और मुझे तो विशेष रूप से याद है। मैंने हमेशा सुना है कि आप मातृभाषा को लेकर बहुत ही टची रहे हैं, बड़े आग्रही रहे हैं, लेकिन बात को कहने का आपका अंदाज भी बड़ा खूबसूरत है, जब आप कहते हैं कि मातृभाषा आंखों की रोशनी की तरह होती है और आप आगे कहते हैं कि दूसरी भाषा चश्मे की तरह होती है। ऐसी भावना हृदय की गहराई से ही बाहर आती है। श्री वेंकैया जी की मौजूदगी में सदन की कार्यवाही के दौरान हर भारतीय भाषा को विशिष्ट अहमियत दी गई है। आपने सदन में सभी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने के लिए काम किया। सदन में हमारी सभी 22 शेड्यूल्ड लैंग्वेज़ेज़ में कोई भी माननीय सदस्य बोल सकता है, उसका इंतजाम आपने किया। आपकी प्रतिभा, आपकी निष्ठा आगे भी सदन के लिए एक गाइड के रूप में हमेशा-हमेशा काम करेगी। कैसे संसदीय और शिष्ट तरीके से भाषा की मर्यादा में कोई भी अपनी बात प्रभावी ढंग से कह सकता है, इसके लिए आप प्रेरणापुंज बने रहेंगे।

आदरणीय सभापति महोदय, आपकी नेतृत्व क्षमता, आपके अनुशासन ने इस सदन की प्रतिबद्धता और प्रोडक्टिविटी को नई ऊंचाई दी है। आपके कार्यकाल के वर्षों में राज्य सभा की प्रोडक्टिविटी 70 परसेंट बढ़ी है। सदन में सदस्यों की उपस्थिति बढ़ी है। इस दौरान करीब-करीब 177 बिल पास हुए या उन पर चर्चाएं हुईं, जो अपने आपमें एक कीर्तिमान है। आपके मार्गदर्शन में ऐसे कितने ही कानून बने हैं, जो आधुनिक भारत की संकल्पना को साकार कर रहे हैं। आपने कितने ही ऐसे निर्णय लिये हैं, जो अपर हाउस की अपवर्ड जर्नी के लिए याद किये जाएंगे। सचिवालय के काम में और अधिक एफिशिएंसी लाने के लिए भी आपने एक समिति का गठन किया। इसी तरह राज्य सभा सचिवालय को सुव्यवस्थित करना, इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देना, पेपरलेस काम के लिए ई-ऑफिस सिस्टम को लागू करना, आपके ऐसे कितने ही काम हैं, जिनके जरिए उच्च सदन को एक नयी ऊँचाई मिली है। आदरणीय सभापति महोदय, हमारे यहाँ शास्त्रों में कहा गया है:-

"न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः,
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।"

अर्थात् जिस सभा में अनुभवी लोग होते हैं, वही सभा होती है और अनुभवी लोग वही हैं, जो धर्म, यानी कर्तव्य की सीख दें। आपके मार्गदर्शन में राज्य सभा ने इन मानकों को पूरी गुणवत्ता से पूरा किया है। आप माननीय सदस्यों को निर्देश भी देते थे और उन्हें अपने अनुभवों का लाभ भी देते थे और अनुशासन को ध्यान में रखते हुए प्यार से डाँटते भी थे। मुझे विश्वास है कि किसी भी सदस्य ने आपके किसी भी शब्द को कभी अन्यथा नहीं लिया। यह पूँजी तब पैदा होती है, जब व्यक्तिगत जीवन में आप उन आदर्शों और मानकों का पालन करते हैं।

आपने हमेशा इस बात पर बल दिया कि संसद में व्यवधान एक सीमा के बाद सदन की अवमानना के बराबर होता है। मैं आपके इन मानकों में लोकतंत्र की परिपक्वता को देखता हूँ।

पहले यह समझा जाता था कि अगर सदन में चर्चा के दौरान शोरगुल होने लगे तो कार्यवाही को स्थगित कर दिया जाता है, लेकिन आपने संवाद, सम्पर्क और समन्वय के जरिए न सिर्फ सदन को संचालित किया, बल्कि उसे प्रोडक्टिव भी बनाया। सदन की कार्यवाही के दौरान जब सदस्यों के बीच कभी टकराव की परिस्थिति पैदा होती थी, तब आपसे बार-बार सुनने को मिलता था- "Let the Government propose, let the Opposition oppose, let the House dispose." इस सदन को दूसरे सदन से आये विधेयकों पर निश्चित रूप से सहमति या असहमति का अधिकार है। यह सदन उन्हें पास कर सकता है, रिजेक्ट कर सकता है या अमेंड कर सकता है, परन्तु उन्हें रोकने की, बाधित करने की परिकल्पना हमारे लोकतंत्र में नहीं है।

आदरणीय सभापति महोदय, हमारी तमाम सहमतियों और असहमतियों के बावजूद आज आपको विदाई देने के लिए सदन के सभी सदस्य एक साथ उपस्थित हैं। यही हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती है। यह आपके लिए इस सदन के सम्मान का उदाहरण है। मैं आशा करता हूँ कि आपके कार्य, आपके अनुभव आगे सभी सदस्यों को जरूर प्रेरणा देंगे। अपने विशिष्ट तरीके से आपने सदन चलाने के लिए ऐसे मानदंड स्थापित किये हैं, जो आगे इस पद पर आसीन होने वालों को प्रेरित करते रहेंगे। जो लीगेसी आपने स्थापित की है, राज्य सभा उसका अनुसरण करेगी, देश के प्रति अपनी जवाबदेही के अनुसार कार्य करेगी, इसी विश्वास के साथ आपको पूरे सदन की तरफ से, मेरी तरफ से अनेक-अनेक शुभकामनाएँ देता हूँ और आपने देश के लिए जो कुछ भी किया है, इस सदन के लिए जो कुछ भी किया है, इसके लिए सबकी तरफ से ऋण स्वीकार करते हुए मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

श्री सभापति : धन्यवाद, प्रधान मंत्री जी। श्री मल्लिकार्जुन खरगे जी, लीडर ऑफ दि अपोज़िशन।

विपक्ष के नेता (श्री मल्लिकार्जुन खरगे) : माननीय सभापति जी, मुझे थोड़ा-सा कोल्ड इफ़ेक्ट होने की वजह से मेरी आवाज़ उतनी बुलंद नहीं है, जितनी कि प्राइम मिनिस्टर ने अपनी सारी बातें आपके सामने रखीं। ऐसा भी होता है कि जो पहले वक्ता बात करते हैं, वे सारी बातें बोल देते हैं, बफे सिस्टम टाइप यानी पंक्ति में जो पहले जाता है, उसको ज्यादा खाना मिलता है, जो बाद में जाता है, उसको उतना नहीं मिलता है, उसी तरह से जो वक्ता बाद में बात करते हैं, वे थोड़ी इधर-उधर की बातें बोलते हैं। आपसे 30-40 साल से जो पहचान है, उसके आधार पर मैं आपके सामने चंद बातें रखना चाहता हूँ। आप जनरल सेक्रेट्री इंचार्ज, कर्नाटक थे, फिर बीजेपी के प्रेज़ीडेंट भी थे, फिर यह हमारा सौभाग्य है कि आप तीन बार कर्नाटक से राज्य सभा मेम्बर चुन कर आए।

सभापति जी, विचारों के इस सदन, राज्य सभा के चेयरमैन के रूप में आपकी विदाई के मौके पर मैं चंद बातें रखना चाहता हूँ। राज्य सभा, परमानेंट हाउस होने के कारण संसदीय लोकतंत्र में इसकी अलग हैसियत है। आज जब कि देश आजादी के 75वें साल का उत्सव मना रहा है, इस हाउस पर भी देश के लोगों की निगाहें पड़ रही हैं। आपके लिए न यह हाउस नया है, न हम लोग नए हैं। आप 19 सालों तक राज्य सभा में सांसद रहे, आपके साथ हमारे लगाव का एक दूसरा भी कारण है, जो मैंने पहले ही बताया कि आप तीन बार कर्नाटक से राज्य सभा के सदस्य चुन कर आए। आप छात्र जीवन से ही राजनीति में एक्टिव रहे हैं। 'जय आन्ध्र' आन्दोलन चलाने से लेकर

अब तक अपने लंबे राजनीतिक जीवन में आपने कई भूमिकाएँ निभाईं। आप 1978 से 1985 के बीच दो बार आन्ध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य भी रहे हैं।

यूपीए सरकार के दौरान 2008 से 2014 के बीच आप स्टैंडिंग कमेटी होम के चेयरमैन भी थे। मैं आपको विशेष रूप से यह याद दिलाना चाहता हूँ, आप भूलते तो नहीं हैं, क्योंकि आप बहुत से आर्टिकल्स लिखते ही रहते हैं और अपने पुराने विचारों को भी दोहराते हैं। हम पेपर में किसी न किसी दिन उन्हें पढ़ते ही रहते हैं। आर्टिकल 371 जे को लेकर हम कर्नाटक के लोगों ने जब आपसे अपील की कि यह बहुत दिन से पेंडिंग है और इसको एनडीए सरकार में नकारा गया है, तो किसी न किसी तरह से, हैदराबाद, कर्नाटक एरिया को पुष्टि देने के लिए, प्रगति करने के लिए हम उस आर्टिकल 371 जे में यहाँ अमेंडमेंट करना चाहते थे, तब आपने स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन होने के नाते उसको फौरन स्वीकार किया। यहाँ तक कि जब यहाँ पर ऑफिस नहीं था, तो हम लोग कर्नाटक भवन में जाकर, जो चीफ मिनिस्टर थे, उनको भी बुला कर, सभी ने बैठ कर उस आर्टिकल 371 जे के संबंध में बात की। आपने उसको स्वीकार किया और वह अमेंडमेंट के रूप में इस सदन और उस सदन में आया। इस प्रकार से यूपीए सरकार ने इसके लिए जो वादा किया था, उसको उसने निभाया। इसके लिए मैं आपका भी धन्यवाद करता हूँ। जो लोग अच्छा काम करते हैं, अगर उन्हें याद नहीं करेंगे, तो अच्छा नहीं लगता है। आपने हमें यह बहुत बड़ा काम करने की हिम्मत दी और सपोर्ट किया। आपने राज्य सभा में 18 अगस्त, 2017 को सभापति के रूप में अपने प्रथम भाषण में कहा था कि मुझे सभा के दोनों पक्षों की संवेदनाओं, नियमों, मेम्बर्स के अधिकारों, विशेष अधिकारों, भावनाओं और कुछ अवसरों पर उनकी हताशा की जानकारी है। आपने अपने स्तर पर प्रयास किये। आप कई तरह के बदलावों की कोशिश के लिए सक्रिय रहे और आपने इस बात की पैरवी भी की कि सभी प्रमुख राज्यों में अपर हाउस बनाने के लिए एक राष्ट्रीय नीति बननी चाहिए। इसी तरह से, आपने महिला आरक्षण बिल पर सहमति बनाने के साथ-साथ कई दूसरी बातें भी खुलकर कहीं। मुझे भरोसा है कि सरकार यह काम, जिसे आप अधूरा छोड़कर जा रहे हैं, उसे पूरा करेगी। जब मैं लोक सभा में विपक्ष को रिप्रेज़ेंट कर रहा था, तब आप शहरी विकास, आवास तथा संसदीय कार्य मंत्री थे। इसके बाद, जब आप 2017 में राज्य सभा के चेयरमैन बने, तो मैं भी 2022 में नेता विपक्ष के रूप में आज यहाँ खड़ा हुआ हूँ। बेशक, राज्य सभा में आने के बाद हम दो अलग-अलग विचारधारा के लोग थे। आपकी आइडियोलॉजी अलग हो सकती है, मेरी आइडियोलॉजी के बारे में आप सबको मालूम है, मैं उस पर चर्चा नहीं करना चाहता हूँ। यह स्वाभाविक है कि आपसे मेरी कुछ शिकायतें भी हो सकती हैं, लेकिन वे शिकायतें इस वक्त नहीं करनी हैं, क्योंकि आपने इतनी कठिनाइयों में भी अपना रोल निभाया है, इतने प्रेशर में रहते हुए भी अपना रोल निभाया है, जिसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। यहाँ मैं उन बातों को उठाना नहीं चाहता हूँ। मैं चंद लाइनों में अपनी बात रखना चाहता हूँ :-

"अगर तलाश करूँ कोई मिल जाएगा,
मगर तुम्हारी तरह कौन मुझे चाहेगा,
तुम्हारे साथ यह मौसम फरिश्तों जैसा है,
तुम्हारे बाद यह मौसम बहुत सताएगा।"

क्योंकि आपके बाद क्या मौसम होगा और वह कैसे सताएगा, यह मुझे नहीं मालूम है, लेकिन मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि आपने सब तरह के प्रेशर में काम करना सीखा और सब तरह के माहौल में काम किया। जैसा कि अभी यहाँ पर प्रधान मंत्री जी ने भी कहा, आपके संरक्षण में राज्य सभा के अब तक 14 फुल सेशन हुए। आपने मानसून सेशन, 2018 से एमपीज़ के लिए ऑनलाइन नोटिस देने की सुविधा उपलब्ध कराई। आपने संविधान की आठवीं अनुसूची की सभी 22 भाषाओं में सदस्यों को बोलने का मौका दिया, जिससे कई सांसदों को अपनी मातृ भाषा में बोलने में सहूलियत होगी। आपने नॉन हिन्दी इलाके के सांसदों को हिन्दी में बोलने के लिए प्रेरित किया और उन्हें प्रोत्साहित भी किया। आप जिस भी रोल में रहे, गाँव-देहात के लोगों की बात उठाते रहे। आप अटल जी की सरकार में ग्रामीण विकास मंत्री थे, तो आपने 'प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना' शुरू की थी। हमारी यूपीए सरकार ने इसे आगे बढ़ाया, क्योंकि यह गाँव वालों के लिए बहुत फायदेमंद थी। सन् 1987 में अटल जी ने कहा था कि राज्य सभा में रहे बिना राजनीति की ट्रेनिंग पूरी नहीं होती। आप भाग्यशाली हैं, जो इसके सदस्य और संरक्षक, दोनों बने हुए हैं। आप इसके सदस्य भी बने और संरक्षक भी बने और अटल जी का जो कहना था, वह आपने पूरा कर दिया।

सभापति जी, आपने कई बार यह बात कही है कि पब्लिक लाइफ में राजनेता न कभी रिटायर होता है, न टायर्ड होता है, जो बात प्रधान मंत्री जी ने भी अपने भाषण में कही है। मेरी आशा है कि आप पब्लिक लाइफ से रिटायर भी नहीं होंगे और टायर्ड भी नहीं होंगे, आप काम करते रहेंगे। आप देश की दूसरी सबसे बड़ी कांस्टिट्यूशनल पोस्ट से विदा होने के बाद भी नागरिकों के बीच और सक्रियता से काम करेंगे तथा इस देश के लोकतंत्र, समता, समानता एवं संविधान के मौलिक तत्वों पर युवा-पीढ़ी का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

आपकी विदाई के मौके पर मेरे मन में कई विचार आते हैं। कोरोना संकट के दौरान भी आपने काफी प्रयास करके हाउस चलाने का प्रयास किया। सिटिंग अरेंजमेंट को बदला गया और सांसदों को कोविड प्रोटोकॉल के हिसाब से बिठाने का काम भी करना पड़ा। यहाँ पर एक बेंच पर एक या दो सदस्यों को बिठाया गया, बहुत से सदस्यों को ऊपर दीर्घा में बिठाया गया, चंद सदस्यों को लोक सभा में बिठाया गया, लेकिन आपने अपना काम नहीं छोड़ा और कोविड पीरियड में भी आप अपना काम करते रहे। आपने वर्ष 2018 में रूल्स की समीक्षा का जो काम आरंभ किया था, उस पर सभी दलों से विचार कर वह काम आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि कई नियमों को बदलने की जरूरत है।

आज हाउस में जो बातें होती हैं, उन्हें पूरा देश और दुनिया देखती है। राज्य सभा और लोक सभा, दोनों की विशिष्ट भूमिकाएँ हैं। मैं यहाँ एक बात यह रखना चाहता हूँ कि लोक सभा टीवी और राज्य सभा टीवी, इन दोनों का मर्जर नहीं होना चाहिए था। जनता से जुड़े सुख-दुःख के मामलों पर गंभीर चर्चा हो, सर्वोत्तम समाधान भी निकले, यह बात देश के सभी लोग चाहते हैं। राज्य सभा अलग-अलग विचारधाराओं की राजनीति का केन्द्र भले हो, नज़रिये में भले कुछ फर्क हो, लेकिन सबका लक्ष्य और सपना देश की इन्क्लूज़िव ग्रोथ, लोकतंत्र और संविधान की रक्षा तथा देश की एकता कायम रखने का होना चाहिए। हमें उम्मीद है कि इसके लिए आपका योगदान जारी रहेगा, क्योंकि आपने पहले ही बहुत बार कहा है कि मैं रिटायर नहीं होता और टायर्ड भी

नहीं होता। इस बात को ध्यान में रखकर इस इन्क्लूज़िव ग्रोथ, लोकतंत्र और संविधान की रक्षा एवं भारत की एकता के लिए आप हमेशा लड़ते रहेंगे।

मैं आपके स्वास्थ्य और सार्थक जीवन की कामना करते हुए इस पंक्ति के साथ आपको बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ, क्योंकि यह बहुत ही अहम है:

"कहाँ आँसुओं की ये सौगात होगी, नए लोग होंगे नई बात होगी,
चिरागों को आँखों में महफ़ूज़ रखना, बड़ी दूर तक रात ही रात होगी,
मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी,
किसी न किसी मोड़ पर फिर मुलाकात होगी।"

आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति : मैं व्यक्तिगत रूप से बफे को ज्यादा पसंद करता हूं। मैं सहपंक्ति भोज के पक्ष में हूं और इसमें विश्वास भी करता हूं, इसलिए आप निश्चिंत रहिए। आप लाइन में कहीं भी बैठें, वहां तक आपको सब मिलेगा, लेकिन सब लोगों को अपने-अपने स्वास्थ्य के हिसाब से खाना है। श्री देरेक ओब्राइन, प्लीज़ आप बोलिए। Please. *...(Interruptions)...* Please. *...(Interruptions)...* Yes, Shri Derek O'Brien.

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, just after Independence, in undivided Andhra Pradesh, those who owned agricultural land, how did they show how well-off they are and how important they are in that area? They had a very interesting way of showing. They didn't show, it just that they had, the number of bullocks you owned, the number of pairs of bullocks you owned. If you owned, two pairs of bullocks, you were quite well off; if you owned four pairs of bullocks, you were even better off, and a few families owned six or eight pairs of bullocks. One such family owned eight pairs of bullocks, so good so far. But, one day, one of these animals, they went totally nutty and the bullock actually gorged a lady in the stomach. The lady was carrying a baby or a one year old boy, dropped the child, obviously. The lady was taken to the hospital and the lady passed away, and the child lost his mother at the age of one. This is your story, Sir, of an early loss, and from that early loss, whatever you have done which we can find, not only in Wikipedia entries but in a glorious career you have had. I don't want to go there today because, I think, we have lots of speakers, so, we will all talk about that. I am sure that will make a good story for your autobiography which you must write. I have had many experiences with you, but a few I am going to talk about today and I, certainly, don't expect answers for any of

those, but maybe one day you will write an autobiography! So, this child who lost his mother in these tragic circumstances, of this agricultural family, cut to September 20, 2020. To me, that was a very important day in my outlook about you and maybe, you will answer that question some day in your autobiography! On September, 20, 2020, the day this House passed the Farm Bills, you were not on the Chair. You were not. Sir, you are the only Vice-President who has served four terms as a Rajya Sabha M.P. You are the only Vice-President who has visited every Indian State, all 28 States, including the States in the North-East. Sir, these we know but some day you will give us the answers. When I first came here, you used to sit this side, and I remember, on the 2nd of September, 2013--I think, your seat was just here--you made a passionate speech on petrol and diesel. ...*(Interruptions)*... Sir, one day you will tell us in your autobiography; anyway, let us not go there. On the 1st of March, 2013--I remember one more speech of yours, you led the discussion--Mr. Jaitley was on that side and you made a intervention for about five to six minutes on phone tapping. * And you have really given one piece of advice to us, the Opposition and the Government; it is, "Talk to each other and solve." I think that is one take, the take-away; in the meetings, we know, sometimes, what happens in Chambers stays in Chambers. But you used to always say--you talk in the same tone when you talk to the Government, and when you talk to Opposition--"Talk and Solve." And nobody is perfect. *Earlier, today, some point was made about productivity in Rajya Sabha. Yes, Sir; you have been the Chairman of the Rajya Sabha. We want to congratulate you. If you look at the productivity numbers and the number of Bills passed, you were there. But there is another side to this argument. And as you leave today, Sir, we would urge upon you because you have, at least, twenty more years to offer in public life and these are the thoughts we would urge on you. I say because there is another school of thought which thinks that * And you have often advised us to send Bills to Committees; like, why only six out of ten or why only one out of ten Bills are going! You would say, "Send Bills, scrutinize these Bills". So these are the issues, which I am sure, you will address because I know, autobiography or no autobiography, you will speak your mind and you will guide us.

---

* Expunged as ordered by the Chair.

Sir, of all the happy things we remember is the great food you served us and the great host that you are. Not only you, but, I think, equal credit should go to Mrs. Naidu. Every time you hosted any MP, all of us, in the Vice-President's House, it was absolutely wonderful and since I eat mostly non-vegetarian food, that became even better. Sir, we wish you and Mrs. Naidu, on behalf of my party, the All India Trinamool Congress, and everybody, happy years ahead. And, I remember, as you once mentioned, "You are the 'Chief' outside; but you have a 'Home Minister' at home, who actually controls whatever is going on". Sir, the Prime Minister, very nicely put it in his speech where he said, "Every word you said is revered and it is preferred". Yes, Sir, we would like to add to that. We wanted you to stay here longer, the fact that you are going is, actually, deferred.

MR. CHAIRMAN: Thank you, Mr. Derek. Now, Shri Tiruchi Siva.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Mr. Chairman Sir, there are some moments which are unavoidable, but, at the same time, unacceptable. This is also one such. Only in the agony of parting, do we look into the depths of love. Today, we are bidding you farewell only because it is customary one; that is all. But we can never do so.

Sir, on behalf of my Party, DMK, and my fellow colleagues here from my party, we have a special regard for you. I shower upon you profusely, our thanks, appreciations and congratulations for your tenure in this august House as Chairman.Sir, there are many things to recollect. We would have irked you sometimes seeking opportunities. Instead of doing anything which is very harsh, your just one word with affinity and command, 'Siva' has made me to sit down. Nothing else you resorted to. I have many times told you that also. Sir, in Tamil, there is a word (ARIMAA NOAKU) meaning, 'a look of a lion'. In the forests, not all animals stand and look back. Only the lion can do so. It only can look back the path it treaded. It alone can bring behind it all the animals in the forests in a disciplined manner. You are a lion, Sir; you can look back, for you have left behind very great track record.

Sir, you started your life as a very good student. As a student leader, wedded yourself to an ideology; you started climbing the ladder. You never came down. You were a Member of the Legislative Assembly; you became the leader of your party. You became a Member of this august House. You were in the Opposition Bench. You were a Minister. Now, you have decorated the second highest position in this country, the Vice-President; the second constitutional authority. Sir, we had great times with you as the Chairman of this House. One thing you will also appreciate.

We might have disturbed you. We might have shouted, of course, in the path of democracy, seeking opportunities, insisting for debates but, at the same time, during our discourse, never have we come down the decorum of this House. You have appreciated many times that the debates in this House by all the party Members are par excellence.

Sir, on this occasion, I think this is the right time and right place to put on record three things. The hon. Leader of the Opposition mentioned that only in Rajya Sabha, a Member can speak in any of the 22 languages in the Eighth Schedule of the Constitution, and that you only brought that into action. Wherever you go, you have advocated for the regional languages to cherish. You advised everyone, 'please protect, enrich your mother tongue, at the same time, learn some other language also'. Nothing wrong with that! Based on that alone, you have done other two things which many of our colleagues themselves would not know but I would like to put on record today, not only to the Members in this House but also to the people outside in the world.

Sir, there has been a customary practice and convention in the Parliament. It is a British legacy. Whenever a Member or a Minister lay a paper on the Table of the House, the convention is to say, 'I beg to lay on the Table of the House'. I am a product of the self-respect movement, Sir. So, such words are indigestible. We were not able to digest. I had represented to your predecessors many a time, to the Government also, many a time. But nobody bothered. Sir, I must appreciate and thank you, you only removed that word. Why in a Democratic Republic, any one should beg to the other? You removed that word. And, now with heads held high, every Member and Minister are just tabling the papers, not beg. They rise to lay the paper on the Table of the House. And, second, Sir, all notices we send to the Secretariat are addressed to the Secretary-General, and many might not have noticed when we signed it saying 'Yours Faithfully'. It doesn't suit a Member of Parliament to write to an office, 'yours faithfully'; it is not a school. I represented it to you, Sir. You asked, 'what can be the substitute'? I said, 'Yours Sincerely'. And, now all our notices are having 'Yours Sincerely'. I don't know about the other House. I don't want to say that, even if it be so. Sir, you upheld the dignity of the Members and also you were always very much interested in upholding the decorum and dignity of this House. Sir, we cannot forget your face in this House as Chairman. There are many other things. And, personally, I cannot forget you. I can recollect you in many ways. Whenever I see S.V. Ranga Rao on the screen, I will be reminded of you only, that majestic look and walk only you resemble. You will be in Chennai, that also I know, you will be very close to us. I request you-- Sir, Derek told, you will write --

please write an autobiography, which will be your real contribution to the posterity of this country. Only one word, Sir, we will miss you. We will miss you, Sir, Thank you.

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली) : सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे आज इस भावुक अवसर पर अपनी बात कहने का मौका दिया है। सर, जब मैं इस सदन में आया, तो विपक्ष में होने के नाते कई बार अपने मुद्दों को लेकर मुझे आपके गुस्से और आपकी नाराजगी का सामना भी करना पड़ा, लेकिन मैं आज पूरे देश को इस सदन के माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि मैं एक ऐसा सौभाग्यशाली सांसद हूं, जिसे आपका सबसे अधिक प्यार मिला है, आपकी सबसे अधिक गाइडेंस मिली है और इस चेयर से हटने के बाद आपने सबसे अधिक समझाने का काम किया है। मैं जब कभी भी चैम्बर में गया, तब आप एक अलग इंसान थे, घर पर गया, तब आप एक अलग इंसान थे। आपने चेयर से हमेशा यह समझाने का काम किया कि सदन की मर्यादा के हिसाब से चलो। सर, मुझसे इन साढ़े चार वर्षों में कभी भी कोई भूल, कोई गलती हुई है, तो मैं उसके लिए आपसे हाथ जोड़कर माफी चाहता हूं। उसमें कुछ भी व्यक्तिगत नहीं था, उसमें जो कुछ भी था, वह कभी देश के किसी मुद्दे पर, कभी जनता के किसी मुद्दे पर था। उस वक्त मुझसे जो भी गलती हुई है, मैं उसके लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हूं।

सभापति महोदय, आपका एक वाक्य था, आपने इसी चेयर से बैठकर वह वाक्य कहा था और यह हाउस, यह राज्य सभा का सदन उसी का प्रतिनिधित्व करता है। आपने उस भावना को इस सदन में हमेशा जीवित रखा है। आपका वह वाक्य था - 'विविधता में एकता-भारत की विशेषता।' आपने सारी भाषाओं में, यहाँ तक कि जो हमारी स्थानीय भाषाएं थीं, हमें उनमें भी सदन में बोलने की अनुमति दी। महोदय, यह आपकी एक वैचारिक सोच का प्रतीक है और हम सभी इसके लिए आपके बहुत-बहुत आभारी हैं।

सर, हो सकता है कि आप आगे हमें इस चेयर पर न दिखें, लेकिन मैं एक बात के लिए आपसे जरूर रिक्वेस्ट करूंगा कि आप जिस प्यार से हम लोगों को भोजन के लिए बुलाते थे, वह सिलसिला रुकना नहीं चाहिए। आप जब भी दिल्ली आएं, तो दिल्ली का सांसद होने के नाते हम चाहेंगे कि हमें उसकी सूचना मिले और हम सभी लोग आपके साथ बैठें, आपसे हमेशा सीखते रहें। सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत आभार। महोदय, मैं आम आदमी पार्टी की ओर से, अरविंद केजरीवाल जी की ओर से और हमारे सदन के सभी सांसदों की ओर से आपके उज्ज्वल भविष्य की प्रभु से प्रार्थना करता हूं और ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं। महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Mr. Chairman, Sir, it is a very poignant day, it is a very heavy day. I do not want to bid you farewell, honestly; I don't want to bid you farewell. I just hope that you will stay on and on. But, then life has its own transitions. Sir, I want to first thank you on behalf of my party, Biju Janata Dal, on behalf of our leader, Shri Naveen Patnaikji, for your service to the nation, for your service to this country, for your service to this House and being the great man that you are, with your simplicity, with your charm, with your dedication, with your commitment having

so much for all of us. It has been only three years that I have come to know about you personally, but it seems like a lifetime! Time is short. Hon. Prime Minister was speaking about how you have always promoted the youth, how you have promoted the regional languages, which the hon. LOP and others also have been saying it. I will not elaborate on that. I have brought evidence to the House today. I am going to lay on the evidence for everyone to see. The day was February 7th, 2020. The day before, I had been to your Chamber and you had said, 'Sasmit, why don't you speak in Oriya? It is your mother tongue! Speak more!' The next day, I spoke in Oriya, which was my first Zero Hour mention on a specific topic. You were on the Chair, Sir. You said, 'उत्तम कहुछन्ति', meaning you spoke well. After a few minutes, I get this brief note from you, Sir. What does it say? It is that evidence. 'उत्तम कहुछन्ति', written by you, signed, Shri Venkaiah Naidu, to me, Sasmit Patra! Though there are many evidences, why have I brought this evidence? It is because this was a note from you to me and it is a memory of a lifetime. It will stay with me as long as I am there. That is what Shri Venkaiah Naiduji means to all of us.

Sir, on promotion of youth, there are many young Members who are very new to the House. I just wanted to take this opportunity as to how you promoted the young Members of Parliament. In August, 2020, suddenly I had a phone call in the evening saying that I have been appointed to the Panel of Vice-Chairmen of Rajya Sabha. I was surprised! I said, I am only thirteen months into Rajya Sabha. You were the person whom I called in the evening and asked, 'Do you think I am capable of presiding over this august House? Do you think I will be ever able to do justice?' You said, 'I believe in you; I stand by you; you do your work and keep working hard.' That was Shri Venkaiah Naiduji.

Sir, I will not take much time. You have always been a friend of Odisha. Whenever we have brought matters of Odisha before you, you have always given us a patient hearing. Whenever there had been matters of Odisha that had to be raised in the House, you were always open to the idea of how we can develop more and more. Whenever new Members of Parliament from across party-lines used to come up, you used to encourage them. One thing I must tell you, Sir, that your presence in the Chair is very reassuring. Your presence in the Chair gives us strength. Your presence in the Chair inspired and motivated not only the Members of Parliament of Rajya Sabha, you have also inspired and motivated every youth of the nation. I say that with a great measure of humility.

Sir, at the end, I just like to say that I am today reminded of the words of Robert Frost: "These woods are lovely, dark and deep, But I have promises to keep, And miles to go before I sleep, And miles to go before I sleep." Today, you have

miles to go. As Derekji said, you have more than 20 years of public life left. You will continue to inspire us every day. We will continue to cherish your memories every day.

With these words, Sir, I thank you for your wisdom and your leadership. On behalf of Biju Janata Dal and our leader Shri Naveen Patnaikji, we thank you for your service to the nation. Thank you.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Mr. Chairman, Sir, I thank you for the opportunity given to me. Needless to mention, every Telugu person today is proud that this august House is chaired by a Telugu man. On behalf of nine crore Telugu people, I say that you have made us really proud. I speak on behalf of nine crore Telugu people. We all feel proud of you. I hail from Nellore district and you also hail from Nellore district. I have attended so many of your public meetings as a student and we all were inspired. Your political rise is inspirational for all of us, not only for Nellorites but also for the entire country. When you rise, we all feel as if we have risen. This is the inspiration what we have got from you. As the hon. Prime Minister said, I really appreciate your articulation and command over the languages, Telugu, Hindi and English -- I don't know about the other languages -- and Tamil also. The entire nation would recollect that on 5th August, 2019 when emotions ran high and this House was discussing the abrogation of Article 370, your presence on the Chair gave strength to the smaller, regional parties like us at that point of time to speak freely and help pass the Resolution. I take this opportunity to appreciate your support that you have extended to the Standing Committees and how, under you, the Parliamentary Standing Committees gained importance. You reviewed from time to time and gave inspiration to all of us, the Chairmen as well as the Members of the Standing Committee.

Sir, I would like to recollect, at this point of time, one incident. 6 साल पहले जब मैं इस सदन में आया था, almost six years back, तब मैं आखिरी कतार में बैठता था, in the last row. सर, मुझे लगता था कि मुझे शायद बोलने का मौका नहीं मिलेगा। I never thought that I would get a chance. लेकिन आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मुझे ही नहीं, बल्कि सभी नए सदस्यों को बोलने का मौका दिया। सर, मैं सबकी तरफ से आपको धन्यवाद देता हूँ। सर, एक और कारण है, जिसकी वजह से मैं आपका आभारी रहूँगा। आपने मुझे चेयर पर बैठ कर सदन चलाने के योग्य समझा और मुझे मौका दिया। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सर, आप हमेशा स्वस्थ रहें, प्रसन्न रहें, मैं यह कामना करता हूँ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. K. Keshava Rao; not present. Shri Ahmad Ashfaque Karim.

श्री अहमद अशफाक करीम (बिहार) **:** रेस्पेक्टेड चेयरमैन साहब, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया कि आपने मुझे यह मौका दिया। यह सुनहरा मौका मैं किसी तरह से खोना नहीं चाह रहा था। मैं अप्रैल, 2018 से इस सदन में हूँ। वाकई आज का जो माहौल है, ऐसा माहौल मैंने कभी नहीं देखा। यह सिर्फ आपकी मोहब्बतों और जम्हूरी निज़ाम के तेहन हाउस को चलाने की वजह आज कुछ मुखतलिफ़ सा माहौल है। आज इस तारीखी और यादगार अलविदाई प्रोग्राम के मौके पर मैं खुशी और ग़म के जज़्बात का मिला-जुला असर अपने वजूद समेत पूरे मजमे में देख रहा हूँ। आपने जो मोहब्बत दी है, यह उसके नतीजे में है। खुशी इस बात की है कि हमारा जम्हूरी निज़ाम इस कदर मजबूत और खूबसूरत है कि इसके पाबंद आप जैसे कद्दावर लीडर और तारीखसाज़ रहनुमा भी हैं। मुद्दते सदारत मुकम्मल हुआ और खुशदिली से न सिर्फ अलविदा कह गए, बल्कि अलविदाई तकरीब को आप ज़ीनत भी बख्श रहे हैं। आपसे पहले के हमारे बुज़ुर्गों ने भी यही किया और वह आइंदा भी यही रहेगा। हर कोई अपनी मुद्दत पूरी करने के बाद बावकार चेयर दूसरों को सुपुर्द कर देता है, दूसरों को हवाले कर देता है, यही सिलसिला चल रहा है। इससे हमें बहुत कुछ सीख मिलती है। खुशी इस बात की भी है कि आपने अपनी पूरी मुद्दत में तमाम अराकीन, यानी माननीय सदस्यों का न सिर्फ एहतराम किया, बल्कि उन्हें अच्छे माहौल में अपनी बातें सदन में रखने का मौका भी दिया और जम्हूरी रवायात व इक़दार को क़ायम रखने की हत्तनईमकान कोशिश करते रहे। लेकिन ग़म के जजबात का भी दिमाग और दिलों पर गहरा असर है। आपकी यादें, आपकी बातें, मुद्दतों तक रहेंगी और इस मुल्क़ के सियासी और तारीख़ी पन्नों में आपका नाम अदब से लिया जाता रहेगा। हम सब दुआ करते हैं कि आपकी अगली ज़िन्दगी भी सेहत व आफ़ियत के साथ गुज़रे और समाज व मुल्क़ को तरक्की की राह पर लाने की आपकी कोशिशें जारी रहें।

"गूंजते रहेंगे तेरे अल्फ़ाज़ मेरे कानों में,
तूने तो आराम से कह दिया अलविदा दोस्तो।"

[†]**جناب احمد اشفاق کریم (بہار):** قابل احترام چئیرمین صاحب، آپ کا بہت بہت شکریہ کہ آپ نے مجھے بولنے کا موقع دیا۔ یہ سنہرا موقع میں کسی طرح سے کھونا نہیں چاہ رہا تھا۔ میں اپریل، 2018 سے اس ایوان میں ہوں۔ واقعی آج کا جو ماحول ہے، ایسا ماحول میں نے کبھی نہیں دیکھا۔ یہ صرف آپ کی محبتوں اور جمہوری نظام کی طرح ہاؤس کو چلانے کے بدلے آج کچھ عجب سا ماحول ہے۔ آج اس تاریخی اور یادگار الوداعی پروگرام کے موقعے پر میں خوشی اور غم کے جذبات کا ملا جلا اثر اپنے وجود سمیت پورے مجمع میں دیکھ رہا ہوں۔ آپ نے جو محبت دی ہے وہ اس کے نتیجے میں ہے۔ خوشی اس بات کی ہے کہ ہمارے جمہوری نظام اس قدر مضبوط اور خوبصورت ہیں کہ اس کے پابند آپ جیسے قد آور لیڈر اور تاریخ ساز رہنما بھی ہیں۔ مدت صدارت مکمل ہوا اور خوشدلی سے نہ صرف الوداع کہہ گئے، بلکہ الوداعی تقریب کو آپ زینت بھی بخش رہے ہیں۔ آپ سے پہلے کے ہمارے بزرگوں نے بھی یہی کیا اور وہ آئیندہ بھی یہی رہیگا۔

ہر کوئی اپنی مدت پوری کرنے کے بعد باوقار چئیر دوسروں کو سپرد کر دیتا ہے، دوسروں کے حوالے کردیتا ہے، یہی سلسلہ چل رہا ہے۔ اس سے ہمیں بہت کچھ سیکھ ملتی ہے۔ خوشی اس بات کی بھی ہے کہ آپ نے اپنی پوری مدت میں تمام اراکین، یعنی معزز ممبران کا نہ صرف احترام کیا، بلکہ انہیں اچھے ماحول میں اپنی باتیں ایوان میں رکھنے کا موقع بھی دیا اور جمہوری روایات و اقدار کو قایم رکھنے کی حتی الامکان کوشش کرتے رہے۔ لیکن غم کے جذبات کا بھی دماغ اور دلوں پر گہرا اثر ہے۔ آپ کی یادیں، آپ کی باتیں، مدتوں تک رہیں گی اور اس ملک کے سیاسی اور تاریخی پنّوں میں آپ کا نام ادب سے لیا جاتا رہے گا۔ ہم سب دعا کرتے ہیں کہ آپ کی

[†] Transliteration in Urdu script.

اگلی زندگی بھی صحت و عافیت کے ساتھ گزرے اور سماج و ملک کو ترقی کی راہ پر لانے کی آپ کی کوششیں جاری رہیں۔

گونجتے رہیں گے تیرے الفاظ میرے کانوں میں،
تو نے تو آرام سے کہہ دیا الوداع دوستوں!

DR. JOHN BRITTAS (Kerala): Sir, I endorse whatever has been spoken here by my esteemed and senior colleagues, including the hon. Prime Minister and the Leader of the Opposition. Nevertheless, I consider this as my bounden duty to place the appreciation, gratitude and best wishes to you from my Party, CPI (M), on record.

Sir, as you know, we are from the opposite sides of the ideological spectrum. But, Sir, I have no hesitation in lauding your clarity of conviction. Sir, you belong to the category of Statesmen with an organic thinking. What has impressed me the most — I would speak what I feel at heart; I would not speak a word which is not part of my thought process — is that you are a living example of the great diversity of this nation. That is the underlying thread of the unity of this country. I have a reason why I say so. When there is shrill chorus for uniformity of behaviour, culture, language and even food, Sir, you stand tall as a lamppost of rich diversity that the country has and should be. Can I submit one thing? Even the spotless Dravidian attire shows that.Many have spoken about hospitality. I have my own personal experience of almost three decades. Javadekarji, it is more than three decades; please note the point. As a journalist, I have observed you shifting your base from Andhra to the vortex of national politics. Sir, you are simply the king of hospitality. I don't think anybody else in this House can match with it. I would relish those days when we had scrumptious non-vegetarian meals; I stress on that — non-vegetarian meals. I am vegetarian too as much as I am non-vegetarian. At your house and also at the BJP Office — Naddaji, please note the point — many of my juniors in journalism have pleasantly surprised to think about the menu at that time. At that time, prawns and cooks used to fly from Vijayawada and Guntur to Delhi.

Sir, I think, I would be failing in my duty if I don't spell out this point. There is a feeling, amongst many, that you would go down in the history as the President the nation has missed. This is something which I thought that I should say.

DR. M. THAMBIDURAI (Tamil Nadu): He will come once again.

DR. JOHN BRITTAS: Sir, I have been seeing the House from inside, outside and from above. I cannot think of a Chairman who got involved with the nitty-gritty of the House like you. I have not seen any Chairman. Many used to come here, sit for an

hour and leave. But, you used to get involved even in the minutest aspect of the House. You have a long grueling journey from a village in Andhra, becoming an MLA, MP, Minister and also helming the organizational structure of a political party. Sir, with this long experience, you could even read the minutest emotion in our minds. One important aspect in your approach was that you are cut for the parliamentary democracy; I should say that. And, you are leaving at a time the parliamentary democracy needs you more; I would say that. Shri Derek O'Brien was saying about * I don't know what he actually meant but I feel that you are leaving at a time when we require you more, Sir. Your habit of disagreeing but allowing us and respecting us the right to express our view was something which should be talked about. Sir, one more thing. Small political parties, that is something which I need to say about, because you believed and you had the conviction that though some of the parties may be insignificant in numbers, their voices are relevant and vital to the existence of this nation as a plural polity. Sir, I would be failing in my personal duty if I don't speak about my experience. Please give me one minute. After making my maiden speech, — Sir, you should allow me to say that because the hon. Prime Minister was saying that you have the penchant to promote young and new Members -- on the following day, I got a call from the Vice-President's house. I was pleasantly surprised and I was a little concerned or worried also; after a few seconds, you were on the line, Sir, and you told me that you may not agree with me fully, but my speech was wonderful and you appreciated the homework which I did. ...*(Interruptions)*... Sir, I didn't even share this with my family because my family would think that my character has changed after becoming a Member of Parliament. But you followed it up and you also said something. You said that after reading all the newspapers, you were so sad that not even a single newspaper brought a single line about my speech, which had impressed you. You did not stop there. After two days, at a public function, you narrated this and you also said about the sad plight of journalism. It was a perfect indictment of the media which is indulging in trivial sensationalism and is frivolous. I was also partially responsible.

The other day when a few of us came to your Chamber with my Leader, Shri Elamaram Kareem, Mr. Binoy Viswam and Shri Tiruchi Siva — he is also a Leftist Leader -- you were pouring out your reminiscences about the legendary Communist leaders. You talked about Shri Bhupesh Gupta; you talked about Shri Indrajit Gupta, Shri A.K. Gopalan, you talked about Shri Somnath Chatterjee and you said, "though you differ in ideology, you would want the Leftist movement to survive and to be

---

* Expunged as ordered by the chair.

present in Parliament in full vitality and vigour." One more minute, Sir. When you inaugurated a school in Chennai,-- since Siva*ji* did not say, I should say that -- you quoted a renowned Tamil poet, Bharathiyar, and you said, "it is more virtuous to educate a child than to build thousand temples." That is very relevant. Sir, you have set a benchmark, and I would say it is not an obstacle for your success, but it is an inspiration. Like Mahatma Gandhi said, " Many men have exalted in greatness when they relinquished the Chair." As he said, power is of two kinds. One is obtained by the fear of punishment and other by acts of love. Power based on love, you said, is thousand times more effective and permanent than the one derived from fear of punishment. Wish you all the best for all your future endeavours. Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Hon. Members, I have a list before me. We have 32 speakers. Keep the time in mind. I don't want to cut anybody in between, but, at the same time, the duty compels me that I should remind you about the time. There are many more, other than proposed by party, who also want to say something. We will be able to do justice to them provided we are able to complete it on time. Now, Shri Ram Nath Thakur.

श्री राम नाथ ठाकुर (बिहार) : श्रद्धेय सभापति महोदय, जिस तरह एक परिवार का मुखिया सारे सदस्यों की देखभाल करता है, उसी तरह राज्य सभा में आने के बाद सारे सदस्यों को आपने एक गार्जियन की हैसियत से देखा, समझा और उन्हें दिशा-निर्देश दिए।

संसदीय जीवन में आपने जो ज्ञान, अनुभव, बुद्धि का इस्तेमाल किया, मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपने 13 सत्रों की अध्यक्षता की। मैंने देखा कि कैसे आपने सदस्यों का गुस्सा झेला और कितने अच्छे ढंग से अनुभव के आधार पर उस गुस्से को शान्त किया। आपकी अध्यक्षता में 177 बिल्स पास हुए और समयबद्ध तरीके से आपने बिल्स का निष्पादन किया।

मैं अपनी तरफ से, अपने परिवार की तरफ से, अपने दल की तरफ से, बिहार के मुख्य मंत्री श्री नीतीश कुमार जी की तरफ से, बिहार की 13 करोड़ जनता की तरफ से, राज्य सभा में जितने मेम्बर्स हैं, उनकी तरफ से आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि किसी रचनाकार ने कहा है:-

"नजरें बता रही हैं, तुम दूर जा रहे हो।
पर दिल यह कह रहा है, आप पास आ रहे हो।"

इन्हीं चंद शब्दों के साथ, मैं आपके प्रति संवेदना व्यक्त करता हूँ, धन्यवाद।

श्री सभापति : धन्यवाद, राम नाथ जी। डा. एम. थंबीदुरई।

DR. M. THAMBIDURAI (Tamil Nadu): * "Sir, I lovingly submit my gratitude and affection to you, at first."

Mr. Chairman, Sir, I thank you for the opportunity given to me to pay my gratitude to the hon. Vice-President and Chairman of this House who is demitting the Office today after a long and cherished career spanning over half-a-decade starting from your college days.

Sir, I recall and recollect the long friendship I have with you since the days you came to Parliament in 1998. I was the Minister for Law and Surface Transport under the able leadership of Shri Vajpayeeji. So, I had the opportunity of seeing you in Rajya Sabha participating in many of its activities. And also, Sir, when I became the Deputy Speaker of Lok Sabha with the support of our hon. Modiji and Amma, you were the Parliamentary Affairs Minister then. I have seen your hard work and pleasant manners in dealing with friends and fellow Members which have been the prime reasons of your steady growth.

Sir, I also want to mention the days you had spent in Apollo Hospital when Amma, our hon. Chief Minister, was there. You spent a lot of time there, helping us recover from her death. Unfortunately, she spent her last days in the hospital. You helped with arrangements for the funeral and other things. Our Party, AIADMK, and I cannot forget those days that you spent with us. We are very grateful to you. At the same time, as Minister for Rural Development, under the able leadership of Shri Modi, as Minister for Parliamentary Affairs, Urban Development, Housing and Poverty Alleviation and others, you have given us impeccable administration. You have initiated several noteworthy reforms in the portfolios that you held. Your contribution to the success of the *Pradhan Mantri Gramin Sadak Yojana* is commendable. Also, Sir, as our friends said, you are a true leader who gives importance to all national languages. As you said, they are not regional languages but national languages. As the hon. Prime Minister mentioned, you gave opportunity to Members to speak in their mother tongue. That was one of your initiatives that we appreciate and won't forget. In the spirit of true federalism, you showed us how our Indian culture and diversity need to be preserved. As others have said, we would remember your speeches and choice of vocabulary. You are a very experienced person and your rich experience would guide us in the days to come. As everybody here has said, there is no retirement in your life. There is still a lot to do. Nowadays, I get this thought very often that you are the Vice-President of the country now, but that is not the end; there would be other opportunities also. Your demitting this Office is a temporary

---

* English translation of the original speech delivered in Tamil.

phenomenon in your public life, but there would be more opportunities. I am hoping that God willing, you would come to Parliament once again to guide us in some other capacity. I have served in the capacity of Presiding Officer for 15 years in the Lok Sabha.

Without taking more time, I end my speech here. You would have many more opportunities in the future to serve Mother India. May God bless you with good health, happiness and joy! All the best wishes! Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: *Nandri*, Shri Thambidurai! Now, Shri Praful Patel.

SHRI PRAFUL PATEL (Maharashtra): Respected Chairman, Sir, I consider it my honour to have known you since the days you came to Parliament. You came here as a Member of this House and I was probably a Member of the other House in those days. I also consider it my privilege to have served under you as the Chairman of this House. We have very many fond memories. Also, you and our Leader, Shri Sharad Pawar, enjoy a very special relationship, a very special bond, because of your deep love for rural India and the agricultural community. That is, I am sure, a big binding factor for the two of you.

Sir, you have always been very kind and very supportive. As I said, I have seen you in different roles. When you were a Minister in Shri Vajpayee's Government, as the Rural Development Minister, we would come to you many a time with work from our Constituencies and you would be more than willing and forthcoming to help and support any good work that any Member of Parliament, irrespective of Party affiliations, may come to you with. These are qualities which don't come to everybody naturally. I don't think these qualities have to be acquired. They come naturally to you and you have been very, very supportive of all Members of Parliament. Even here, we have seen, as the Chairman, you have encouraged many new Members. I acknowledge the fact how you have been giving them opportunities to speak about the areas of interests which Members of Parliament may have, and also the fact that you have been troubled a lot by us. In the House, I have seen many emotional moments which you have gone through. Actually, I tell you that I was pained whenever I saw a tear or two in your eyes. I know the anguish and the dilemma which you were going through. I am sure hon. Members also acknowledge it. Maybe, there were political compulsions, but as far as I am concerned or my Party or Shri Sharad Pawar is concerned, we know very well that you have drawn a *Laxman Rekha* for decorum in this House, which we always adhered to. I have never given you, or, our Party has never given you, any reason to feel agitated or feel angry about

our conduct. Nonetheless, many a thing one can speak and many have spoken. Sir, you have already mentioned about the paucity of time. So, all I can say is that we wish you all the very best. अभी आपको अपने जीवन में इस देश के लिए बहुत योगदान करना बाकी है। सर, आप यहाँ से जाएं, किसी और जगह पर अपने कार्य की शुरुआत करें। आपसे एक ही गुज़ारिश है कि आप जहाँ भी रहें, स्वस्थ रहें, लेकिन हम लोगों को कभी अलविदा न कहें।

श्री सभापति : शिवसेना से कोई है? नहीं है। प्रो. राम गोपाल यादव जी।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं इस तरह के अवसरों पर अक्सर अपनी पूरी बात कभी कह नहीं पाता हूँ। मैंने इससे पहले डा. शंकर दयाल शर्मा जी से लेकर अब तक, सभी माननीय सभापतियों के इस विदाई फेयरवेल कार्यक्रम को देखा है, लेकिन मेरा आपसे व्यक्तिगत अटैचमेंट बहुत रहा। मुझे आपसे जैसा स्नेह मिला, वैसा पहले किसी से नहीं मिला था। हालांकि, माननीय भैरों सिंह जी से भी हमारे बहुत अच्छे रिश्ते रहे, लेकिन आज आपके विदाई समारोह में मुझे जो महसूस हो रहा है, ऐसी अंदर से परेशानी मुझे कभी नहीं हुई। मुझसे पहले जिन वक्तओं ने जो कुछ कहा, मैं उनसे अपने आपको संबद्ध करते हुए यही कहना चाहूँगा कि आज आप सारे प्रोटोकॉल, सारे बंधनों से मुक्त हो रहे हैं, इसलिए आगे आने वाले समय में आप अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से, स्वतंत्रता पूर्वक लोगों को संदेश दे सकते हैं, चाहे जब भी आप यूनिवर्सिटीज़ में जाएं, क्योंकि आपको लोग बुलाएंगे ही और आप अपनी बात कहने में बहुत सिद्धहस्त हैं ही, तो इसमें कोई बंधन न हो। देश के हित में, संविधान के हित में जब भी कुछ कहना पड़े, मैं यह उम्मीद करूँगा कि आप उसी तरीके से कहेंगे। आप स्वस्थ रहें, आपका परिवार ठीक तरीके से रहे, यही मेरी कामना है।

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, these moments are really such moments where we feel that each word is so valuable. We find it difficult to find apt words to express our hearts. Sir, I remember the first day when I made a call to you. At that time, I was only designated to become a Member of Rajya Sabha. But, you were so kind to allow me to come to your house to meet you in person. When I went there, I thought that you would give me two or three minutes, as you do here, but on that day, you were so benevolent, you were so kind to give me 30-40 minutes to talk. You talked about your past, your RSS days, the days in which you walked barefooted through the villages of Southern India - Karnataka, Tamil Nadu and Andhra, of course. Then you told me that ideologies might differ, but the man, greatness of humankind should remain. On that day, you told the same thing as Dr. Brittas was mentioning here. You told me about the glorious past of the Communists in the Parliament of India. You mentioned the names of Shri Bhupesh Gupta, Shri Indrajit Gupta, Shri Jyoti Basu and Shri Hiren Mukherjee, of course. You mentioned those names and you told that the Opposition has a role to play in democracy. You told that the Communists may

be small in number today, but you mentioned one more thing as to why the Communists remain separated today. You demanded for the Communist unity, for which my Party stands. I remember, you very correctly told that the Communist parties, in that way, can play a better role for the Communists and for the democracy of this country. Similarly, so many such fond memories are there.

Sir, you have scolded us a lot in this House when we made some slogans here, or, when we made some ruckus, as you may call it. I remember it. It was not purposeful. When I used to see your face with sadness, I would like to tell you now that I felt so sad as if my uncle was feeling sad with me. You have inculcated that feeling in all of us. It is true that we differ on so many issues, but the man in you, I should tell, is a man, which should be mentioned always in capital letters. Once you made an open call to the public that the public should teach a lesson to all the Members who make ruckus in the House. It was covered by all the newspapers. I was forced to write an article because my mind told me that it should not go unnoticed. I was opposing your viewpoints. In that article, I wrote how you find us; how you treated this House. I wrote, "You might have scolded us; you might have differed with us. But you always felt that we are your people and you treat this House as your own house, and we feel that you are the guardian of this House." With that feeling, I differed with you, I strongly opposed you, and that opposition was ideological. But, our love for you, regard for you, respect for you is unchanged. Nobody can change it.

I can tell you one more thing. When I look at the Press Gallery, I think, why a democrat like you still keeps that Gallery, that lounge for the journalists, remain like this. During the Covid days, it was okay, but now, there is no Covid. So, please see that whatever you can do afterwards, the House should be opened for the media. Without the media, without the public debates, without taking the message to the public, there is no meaning for the Parliament. I know that you understand this.

While concluding, I would like to read the following words that I have just written here. Sir, we thank you for upholding the greatness of this great country. We thank you for the commitment that you have cherished for the values of democracy. We thank you for the agonies that you might have experienced in your noble struggle to remain as a secular democrat in this difficult political landscape. We thank you for the tears that you have showed in your eyes. Those tears show who you are as a person. I bow my heart. I embrace you with all love, all respect, all affection, with the feeling that you are somebody so close to our hearts. I conclude, Sir. Thank you.

श्री रामजी (उत्तर प्रदेश) : धन्यवाद सर। महोदय, यह ज़ाहिर सी बात है कि विदाई एक भावुक पल होता है और इस भावुक पल में यह ज़रूर होता है कि हम जैसे युवा और तमाम लोग उस व्यक्ति से क्या सीखते हैं! महोदय, हम लोगों ने आपसे बहुत कुछ सीखा है। हमने आपके जीवन के संघर्ष को पढ़ा, चाहे आपका 'जय आंध्र मूवमेंट' रहा हो, चाहे वह जयप्रकाश नारायण जी की 'छात्र संघर्ष समिति' रही हो, इन सारे मूवमेंट्स में आपने बहुत संघर्ष किया। आंध्र प्रदेश के एक छोटे से गाँव 'नेल्लोर' में जन्म लेकर आपने इस देश के उपराष्ट्रपति तक का सफर तय किया, महोदय, यह हम सब के लिए प्रेरणा का एक स्त्रोत है। मेरे पास बहुत सारी बातें नहीं हैं, लेकिन यह ज़रूर है कि आपकी ऊर्जा, आपकी एनर्जी और आपका देश प्रेम हम सबके लिए प्रेरणास्त्रोत है, जो हम सबको हमेशा प्रेरणा देता रहेगा। हमें हमेशा आपकी याद आती रहेगी और हम सभी लोग आपके जीवन की शुभकामनाएं करते हैं कि भविष्य में आप स्वस्थ रहें और हम सबसे कनेक्टेड रहें, जय-हिन्द, धन्यवाद।

SHRI KANAKAMEDALA RAVINDRA KUMAR (Andhra Pradesh): It is a great privilege to speak on this occasion today but I am speaking with a heavy heart.

Sir, your journey as Presiding Officer of this august House commenced on 11th August, 2017 and after completing your term, you will demit office on 10th August, 2022. Your entire tenure as Presiding Officer of this august House has been very eventful and remarkable with innovations.

Sir, under your leadership, I have learnt so many things like how to become a good Parliamentarian. You always remained as a guiding force to me and to all the Members of this august House, and, you always motivated the Members of this House to give their best in discussions during passing of Bills and any other Business that was transacted in the House.

Sir, I do not have any hesitation to say that you are pride of the country in general, and, of Telugu people, in particular. The way you promoted the usage of Indian languages in the House and encouraged more and more Members to speak in their mother tongue while raising issues in the House is appreciated by one and all. I can recollect that my bonding with you had its genesis during the days of student life as student leader and also as leader of Jai Andhra Movement starting in Nellore District, and, that bonding which started during the student life continued between us till now and it will continue forever.

Sir, the books written by you during your tenure as the Presiding Officer of this august House stand testimony to the scholarly aptitude you have within yourself. You never missed any forums to give speech on wide-ranging subjects, which shows the deep knowledge you have in each and every subject.

Under your auspicious leadership, we had the privilege of online submission of various notices through 'e-notices portal'. Many efforts were made to reduce the

usage of paper in the day-to-day functioning of the House. Sir, you have been rendering marvellous services particularly to Telugu people under Swarna Bharat Trust. Now, according to you also, though you are retiring from this office, you are not tired, and, I hope you will continue to render services to the public at large with the same energy.

I remember one recent occasion, when you got angry, which I never witnessed before. Recently, when the House was being frequently disrupted, you expressed your anguish by saying, "My 'operation' depends upon your 'cooperation'; otherwise, there will be 'separation'."

Finally, Sir, let me thank you for your encouraging words, both to the Treasury Benches and the Opposition. I also thank you for your guidance, which I hope will continue forever. Thank you very much.

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री रामदास अठावले) : सभापति महोदयः

"आप हमें छोड़कर जा रहे हैं, फिर हम यहां क्या करेंगे।
आपने हमें इतना विश्वास दिया है कि हम किसी से नहीं डरेंगे,
और 2024 का चुनाव नरेन्द्र मोदी जी नहीं हारेंगे।
*आपने मुझे मौका दिया हर बार, इसलिए मैं करता रहा *।"*

श्री सभापति : अठावले जी, आज मत कहिए।

श्री रामदास अठावले : महोदयः

"आप कभी नहीं मानने वाले हैं हार,
इसलिए आप आइए फिर एक बार।
जो आते थे बार-बार वैल,
उनको सस्पेंड करके आपने उनका बंद कर दिया था खेल।
*
इसलिए अभी वे नहीं आएंगे वैल।"

...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : आज इन चीज़ों को छोड़ दीजिए।

श्री रामदास अठावले : मैं इतना ही बताना चाहता हूं कि आपका अंदाज़ बहुत अच्छा था। आप सभी लोगों को साथ में लेकर चलते थे। आप गड़बड़ करने वालों की वजह से एक मिनट के अंदर

---

* Not recorded.

हाउस एडजर्न करते थे। उनको ज्यादा हंगामा करने का मौका नहीं मिलता था। यह बात ठीक है कि आप बहुत अनुभवी हैं, हाउस चलाने के बारे में आपका अनुभव बहुत अच्छा रहा। आप पांच सालों तक हमारे साथ रहे और सभी मेम्बर्स को आपने मौका देने का काम किया है।

जब मैं बोलता था, तब आप बैल बजाते थे। आप बैल बजाते थे, मैं बोलता रहता था, लेकिन आपने बहुत बार मुझे बोलने का मौका दिया। मेरी रिपब्लिकन पार्टी है, वह बाबा साहेब अम्बेडकर जी की पार्टी है, संविधान निर्माता की पार्टी है। इस पार्टी की तरफ से मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। हम आपको नहीं छोड़ेंगे, हम आपको हमेशा बुलाते रहेंगे। आपकी स्पीचेज़ सुनते रहेंगे। हमने इस हाउस में बहुत बार आपकी स्पीचेज़ सुनी हैं। हम बाहर भी आपको हमेशा बुलाएंगे और आपका मार्गदर्शन लेते रहेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। आपने हाउस बहुत अच्छा चलाया, इसलिए आपको शुभकामनाएं देता हूं। जय भीम, जय भारत!

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shri Birendra Prasad Baishya. You have only two minutes.

SHRI BIRENDRA PRASAD BAISHYA (Assam): Hon. Chairman, Sir, on behalf of my Party, Asom Gana Parishad, today I am standing here not to say goodbye or farewell to you because, Sir, goodbye or farewell is not applicable to you. In my student life, when I used to take part in debates, once I got the topic, 'we cannot say goodbye to the *mahatama*'. Sir, we cannot say goodbye to you because your work, your advice, your guidance will always remind us of you. In my parliamentary life, I have seen you as a senior Minister, as a senior colleague of this House and as the hon. Chairman of this House. Sir, as the Minister of Rural Development, you were the most successful Minister. You are a very learned person. It reflects in your speeches in the Parliament from where we can learn many things in our life. I remember, in the year 2009, when I was a Member of this House, I spoke on many topics from that row, and you always encouraged me. You are a very strong supporter, strong motivator for mother tongue or mother language. Today, I remember when I spoke in the House on our learned singer, Dr. Bhupen Hazarika, you had given the reply in Assemese. This is the recognition of my language. This is the recognition of my mother tongue which is the language of three crore people of Assam. You have told me to speak for two minutes. Today, definitely, I will follow your direction. I, on behalf of the people of Assam and on behalf of the entire North-Eastern Region, pray to Maa Kamakhya to bless you good health, so that you continue to contribute to our society, to our democracy, to our educational system and to our parliamentary system. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you. The House is adjourned to meet at 2.05 p.m.

The House then adjourned for lunch at two minutes past one of the clock.

The House reassembled after lunch at five minutes past two of the clock,
MR. CHAIRMAN *in the Chair.*

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Abdul Wahab.

SHRI ABDUL WAHAB (Kerala): Sir, normally, I talk very less. But, today, I am speechless. In your farewell, I do not know; I can go up to half-an-hour or one hour. Today, it is the first time that I am feeling so. You have already mentioned to many Members to keep it to two minutes. So, I am bound to finish it off. On the last day, I don't want to create any problem for you. My leader, Sayyid Sadiq Ali Shihab Thangal, today morning called me and told me about you and about the position of IUML. So, congratulations for not being in this position tomorrow. As Venkaiah Naiduji we know, we expect a lot from you. As you were earlier the BJP President, we all know your background. You told us and even to the BJP Members that after this assignment, you are not going to public politics. We expect more from you than only public politics. You have a lot of experience. I remember that on my invitation, you came to our college. It was a wonderful experience; you gave advice to youth. You can still do that. We will always call you. I don't know whether you will agree or not. But, please listen to our call whenever you are out of this office. The Prime Minister and Khargeji spoke a lot about you. So, I don't want to add more. Mr. Derek mentioned about a one-year old Venkaiahji. So, I have just one recommendation or pleading to you. You have got good connection with all BJP people. You used to be the BJP President. Ideology will not change. So, when you demit office, tell them that there should be democratic atmosphere in India, at least in Parliament. I expect all the cooperation from you. Thank you very much, Sir.

MR. CHAIRMAN: Thank you. I tell them all -- this side and that side -- to respect democracy. Now, Shri G.K. Vasan.

SHRI G.K. VASAN (Tamil Nadu): Sir, I thank you for allowing me to speak. As you assumed the office of the Vice-President of the country and that of Chairman, Rajya Sabha, you brought with you rich parliamentary experience both from the Opposition side and from the Treasury Benches. This experience has definitely helped you in conducting the proceedings of this august House with wit and wisdom, and benefited each Member of the House to contribute to nation-building.

Sir, your rich administrative experience across Ministries has come in handy in maintaining the morale of officers of the Rajya Sabha Secretariat. Sir, the Career Progression Scheme implemented by you has ensured that in Services like those of Reporters and Interpreters, where promotions are hard to come, we have a fully motivated workforce to support the Members of Parliament.

As Vice-President of the Republic, you have always carried the true spirit of Indianness in your heart and in your word. In your various engagements across the country and all over the world, you have showcased that India is one family. At various fora, you highlighted the importance of the language, especially the mother tongue, and protecting our constitutional values. Sir, we all know your hard work, dedication and concern for the nation. We all know that you are an inspiration for people from different walks of life. I am sure with your vast experience in public life, you will continue to guide the younger generations through your writings and public interactions. On behalf of Tamil Nadu, you have a special concern, I say, * "Go and come", that is always our culture.

MR. CHAIRMAN: * "Thank you". *Namaskar*. Now, Shri Jose K. Mani.

SHRI JOSE K. MANI (Kerala): Sir, today I stand in the House to express my immense gratitude towards you for the inclusive and inspiring leadership you have exhibited as the Chairman of Rajya Sabha. I consider it as my honour to have worked under your Chairmanship, witnessing your passionate efforts in strengthening the parliamentary democracy in our country. There are indeed various instances where this House experienced heated arguments and verbal quarrelling, exchange of words, which I must say, were masterfully diffused by your unbiased approach, light humour, simultaneously ensuring the gravity of the issue at hand was not compromised. As a Member hailing from the southernmost State of the country, Kerala, I would also like to thank you for acting as a strong bridge between the south and the national capital. Coming from a southern State yourself, you are very well aware of the diversity in culture and traditions and have worked towards ensuring these differences will not cause any strife. Your presence, in a way, has ensured that southern States will not be overlooked.

Sir, to conclude, your tenure and presence, as the Chairman, had made an impact in Rajya Sabha with your interventions, deliberations, words, actions and

---

* English translation of the original speech delivered in Tamil.

decisions. As days, weeks, months and years go by, always your name will be remembered in every nook and corner of this august House.

Sir, *adieu* and all the best to you from my party Kerala Congress (M) in your future endeavours. Thank you, Sir.

SHRI AJIT KUMAR BHUYAN (Assam): Mr. Chairman, Sir, at the outset, I convey my best wishes to the next phase of your life. As a politician and a public figure, you have immensely contributed for the growth and development of my country in all spheres. Your role, as a Chairman of Rajya Sabha is highly laudable. You know India and its States by heart. I was pleased to read one of your articles on Kanaklata Barua, a brave heart and a martyr of Quit India Movement of 1942 from my State Assam. I humbly differ from you in political ideas and principles, but I am touched by your advocacy for mother tongue, for local languages. You feel the very essence of glory and the existence of India. Your advocacy for mother tongue inspired me to deliver a speech in Assamese in Rajya Sabha. I could not do it once in your tenure. Sir, I will always remember you as an advocate of mother tonuge and as an advocate of multi-linguistic and multi-cultural diversity of India. Sir, you are an advocate of mother tongue, as I have already said and, for that, I will always remember you. With these words, on behalf of the people of Assam, I wish you good health and long life. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Now Prof. Manoj Kumar Jha.

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार) : शुक्रिया, सर। संभवतः आज मैं आखिरी बार आपके लिए इस संबोधन का इस्तेमाल कर रहा हूँ - 'माननीय सभापति महोदय'। अगर परसों हाउस चलेगा, तब भी मैं यहाँ नहीं होऊँगा, इसलिए मैं यह बात कह रहा हूँ। मुझसे पहले के वक्ताओं ने आपके जीवन संघर्ष और आपकी उपलब्धियों के बारे में बहुत चर्चा की है। मैं उनसे बेहतर नहीं कर सकता, अतः मैं उस पृष्ठभूमि को, उस पन्ने को किनारे रखता हूँ।

सर, मैंने आपके समक्ष पहले भी कहा है कि किसी के लिए अलविदा का क्षण, विदाई का क्षण, फेयरवेल का क्षण बहुत आसान नहीं होता है। कल कोई और वहाँ बैठेंगे, आई बॉल्स को भी एड्जस्ट होने में वक्त लगता है, व्यक्ति को सामंजस्य बिठाने में वक्त लगता है। वह दिक्कत और परेशानियाँ होंगी, वह अपनी जगह है।

सर, मैं 3 अप्रैल, 2018 को इस सदन में आया था। आपने मुझे सबसे पहले वक्त की कीमत बताई। तीन मिनट का वक्त होता था, तब हम चार सदस्य थे। आप कहते थे, "Your time is up." सर, आपका मुझ पर यह प्रभाव पड़ गया है कि अब मैं यूनिवर्सिटी में 50 मिनट की क्लास के लिए जाता हूँ, तो तीन से पाँच मिनट के बाद देखता हूँ कि कहीं आप यह न कह बैठें, "Your time

is up." आपने मेरे साथ सचमुच यह कर दिया है। आपकी वजह से मेरे अंदर वह तीन मिनट, पाँच मिनट का टेम्पलेट सा बन गया है। सर, आप एक और चीज भी कहते थे कि इसके आगे कुछ रिकॉर्ड पर नहीं जा रहा है। अब वह भी दिमाग में रहता है कि अब आगे रिकॉर्ड पर ही नहीं जा रहा है।

सर, मैं इस अवसर पर एक कविता, जो अशोक वाजपेयी ने 'विदा' नाम से लिखी थी, आपके समक्ष, आपके लिए पढ़ना चाहता हूँः

"तुम चले जाओगे
पर थोड़ा-सा यहाँ भी रह जाओगे
जैसे रह जाती है
पहली बारिश के बाद
हवा में धरती की सोंधी-सी गंध
भोर के उजास में
थोड़ा-सा चंद्रमा
खंडहर हो रहे मंदिर में
अनसुनी प्राचीन नूपुरों की झंकार।
तुम चले जाओगे
पर थोड़ी-सी हँसी"

-- वह आपका ट्रेड मार्क है। --

"पर थोड़ी सी हँसी
आँखों की थोड़ी-सी चमक
हाथ की बनी थोड़ी-सी कॉफी"

-- जो अक्सर अंदर मिला करती थी। --

"यहीं रह जाएँगे
प्रेम के इस सुनसान में।
तुम चले जाओगे
पर मेरे पास
रह जाएगी
प्रार्थना की तरह पवित्र
और अदम्य
तुम्हारी उपस्थिति,
छंद की तरह गूँजता

तुम्हारे पास होने का अहसास।
तुम चले जाओगे
और थोड़ा-सा यहीं रह जाओगे।"

सर, यह समय की शिला पर मधुर लेख किसी ने बनाए, किसी ने मिटाए, यह रहेगा।

सर, एक चीज, जो मैंने आपसे सीखी, मैं वह कहना चाहता हूँ। हम सब अलग-अलग पृष्ठभूमि से आते हैं - वैचारिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि। हम बहुत शिद्दत से एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते हैं, लेकिन बीएसी की मीटिंग्ज़ में आप अक्सर कहा करते थे - "Don't stop conversation." मुझे आज के इस ओकेज़न पर अपील करनी है कि संवाद की यह परिपाटी खत्म नहीं होनी चाहिए। सर, कभी डाइनिंग टेबल पर बैठ कर यह मत कह दीजिएगा - "The House is adjourned to meet at 12.00 p.m."

Thank you so much, Sir. जय हिन्द!

श्री सभापति : श्री विक्रमजीत सिंह साहनी।

श्री विक्रमजीत सिंह साहनी (पंजाब) **:** सर, मनोज कुमार झा साहब ने अभी कहा कि वे आखिरी बार बोल रहे थे, लेकिन यह भी एक कैथार्सिस है कि मैं पहली बार बोल रहा हूँ।

Hon. Chairman Sir, I rise before you as a first time young parliamentarian today, who does not come from a political background and are simply social workers. I appreciate your wisdom, articulation, keeping cool and handling the various situations in this House very diligently. Contrary to the perception which I had under the Public Leadership programme at the Harvard University, I had a different perception of the Upper House. But I will always remember your words of wisdom that we have collective responsibility in this House to work and encourage healthy debates as we are accountable to billions of people as their representatives who have sent us here to represent them and the respective States. Having said that, it is an inspiration for all of us who have witnessed you as a young rebel student activist raising issues of student rights as Student union and the Jaiprakash Narayan Chatra Sangharsh Samiti which you launched in Nellore. Your leadership in Jai Andhra Movement at a very young age, I think it is befitting for you, Sir, to have an autobiography, for the benefit of the younger generation. To defend the democracy of this great nation, you spent so much difficult nights in the Emergency. Your contribution in the Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana is very, very meaningful. Sir,

many of us will not know that hon. Chairman. You founded a social service organisation called 'Swarna Bharat' in your hometown at Nellore which runs a school for poor, orphaned and special-need children and self-employment. This shows your empathy and humaneness. I would convey my support to this noble cause and I am indebted to you; it was in your hands a few days back, that I committed my entire salary and perks for the education of poor children. I would conclude at the end by saying that you are leaving behind a legacy of retired but not tired, as hon. Pradhan Mantri*ji* said. You are living behind a legacy. Your tenure have many interesting anecdotes. You retire from this House with great memories. At the end, I would say that this couplet is very synonymous to your personality.

"ख़ुदी को कर बुलंद इतना कि हर तदबीर से पहले
ख़ुदा बंदे से ख़ुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है?"

Jai Hind.

SHRI BIKASH RANJAN BHATTACHARYYA (West Bengal): Sir, I stand here to bid you farewell. But, at the moment, I will just recollect the day when I entered in this House for taking oath, in the bad days of Covid period. On that day, one particular incident which struck me so well was when many Members were taking oath and I took my oath in my mother tongue Bangla, someone had chanted something which really hit the basic concept of Indian secularism. And I was very happy and proud to say that I found yourself immediately reluctant and said that this sort of slogan should not be raised in the House. Sir, this constitutional morality which is very important for country, we find lacking in many personality but you have been able to uphold that. Another thing which really impressed me, I think impressed everybody is your concept of plurality. When there has been an attempt to say that we have a singular attitude, there, you have impressed upon us with your sense of plurality. That is the personality which has impressed me. Another one which struck me is your sense of humour. When I am wondering at this sense of humour, then, I recollect what George Bernard Shaw said, 'A person without humour is a person without education'. Therefore, that basic education of yours really enlightened us to confirm our faith in Indian secularism, constitutional morality and plurality. These are the very important things that I learnt from you. At the end, I just say a few lines from Tagore, which

means, * "I won't let you go". I don't want you to leave but I have to leave you because of the rule of nature. Therefore, Sir, we are not letting you go from us but you are, by call of nature, by the rule, leaving the Chair, but remaining in our heart permanently. With this, I wish you a very good time in future.

श्री राघव चड्ढा (पंजाब) **:** सर, हर व्यक्ति को अपना पहला अनुभव याद होता है, स्कूल का पहला दिन, पहले प्रिंसिपल, पहली टीचर और पहला प्यार। जब मैं इस सदन आया और मैंने अपने संसदीय जीवन की शुरुआत की, तो मेरे पहले चेयरमैन के रूप में मैं सदैव आपको याद रखूंगा। यह मेरा सौभाग्य है कि जब मैंने अपने संसदीय जीवन की शुरुआत की, तो मुझे आपका संरक्षण प्राप्त था, लेकिन यह मेरा दुर्भाग्य भी है कि मुझे सिर्फ एक ही सत्र में आपके संरक्षण में काम करने का मौका मिला। इसी के साथ-साथ जिस दिन मेरी ओथ थी, उस दिन आपने मुझे पंक्चुएल्टी का बड़ा पाठ पढ़ाया था। मुझे याद है, करीब 11 बजे का समय था और चूंकि मैं अपने माता-पिता के साथ सुबह पहले गुरुद्वारे गया, वहां मत्था टेका और रास्ते में ट्रैफिक भी था, जिसकी वजह से मुझे आने में आठ-दस मिनट की देरी हो गई, तब तक शपथ ग्रहण समारोह समाप्त हो गया और आप मुड़कर वापस भी चले गये, फिर मेरी रिक्वेस्ट पर आप वापस आए और आपने मुझे पंक्चुएलिटी का एक पाठ पढ़ाया और उसके साथ-साथ मेरी ओथ भी आपने ही कराई।

इसके साथ मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि आपकी जो जर्नी रही, जो यात्रा रही, वह कहीं न कहीं हम लोगों की यात्रा से मेल खाती है। आप भी श्री जयप्रकाश नारायण साहब का जो एक भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन रहा, उसकी एक समिति के अध्यक्ष रहे। हम भी भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से जन्मे। हमारी पार्टी, हमारे नेता, श्री अरविंद केजरीवाल जी की एक समानता मैं आपके साथ, आपके जीवन से ड्रॉ करता हूं। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : प्लीज़, डिस्टर्ब मत कीजिए।

श्री राघव चड्ढा : इसी के साथ आपकी जो एक जर्नी रही, वह हम सारे युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत है। एक साधारण कार्यकर्ता से लेकर एक विधायक, सांसद, मंत्री और फिर देश के उपराष्ट्रपति के तौर पर आपने अपना कार्यभार संभाला।

अंत में, मैं सिर्फ इतना कहूंगा कि राज्य सभा का पहला सत्र जब 1952 में हुआ था, तो उस समय के चेयरमैन, डा. राधाकृष्णन साहब थे, उन्होंने एक बात कही थी, जिसे मैं पढ़कर सुनाऊंगा। "I belong to no party and that means I belong to every party in the House. It shall be my endeavour to uphold the traditions, the highest traditions of parliamentary democracy and act towards every party with fairness, impartiality, with ill-will to none and goodwill to all."

आपने उन सारे शब्दों को सार्थक किया है, मैं आपको अपना सफल कार्यकाल समाप्त करने पर बहुत-बहुत बधाई देता हूं, धन्यवाद।

---

* English translation of the original speech delivered in Bengali.

श्री सभापति : राघव, मेरे ख्याल से प्यार एक ही होता है ना, एक बार, दूसरी बार नहीं होता है, पहला प्यार ही होता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री राघव चड्ढा : सर, मैं इतना अनुभवी नहीं हूं, अभी जीवन में इतना अनुभव नहीं हुआ है, लेकिन अच्छा होता है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापति : पहला प्यार अच्छा होता है, वही प्यार हमेशा जिंदगी भर रहना है। ...(**व्यवधान**)...

श्री घनश्याम तिवाड़ी (राजस्थान) **:** नीड़ का निर्माण फिर-फिर और नेह का आह्वान फिर-फिर, बार-बार होता है।

श्री सभापति : ठीक है, थैंक यू, श्रीमती पी.टी. उषा।

SHRIMATI P.T. USHA (Nominated): Most Respected Chairman, Rajya Sabha, Shri Venkaiah Naiduji, a great orator, scholar who always stood along with the downtrodden people, particularly during his Nellore days. Sir, your yeoman service to the society as a whole, the nation will ever remember. We, the common man, always extend our love and affection towards your gentle parenting who for the first time stepped into the temple of democracy. I personally have been experiencing the same for the last few weeks. Sir, we can express our gratitude towards you to say a mere 'thank you', but you will always live in our hearts, as a master of oratory. On behalf of our entire Indian sports fraternity, I express my deep gratitude towards your true sportsman spirit, which reflects in your entire life and as Chairman of this august House. I sincerely wish you and your all family members good health, peace and cheer and I wish that you would continue to serve the nation and community as a whole. Thank you, Sir.

SHRI JAWHAR SIRCAR (West Bengal): Sir, I thank you for this opportunity and I am reminded that exactly five years ago, you were gracious enough to preside over my farewell at a time when there was a lot of palpable tension about my departure from Government. I saw the degree of pettiness that I thought I would never live to see, but you rose above that pettiness to say very gracious words. They are inscribed in my heart and that is the impression I have carried one who rises above pettiness and is known to be gracious. I followed your knowledgeable interventions and speeches and that is one thing that I bemoan. I often feel that I am wasting my time because the quality of debate in the House is not packed with that degree of knowledge any more for various reasons.I have not been able to communicate in the last one year or

so because much of it went in disruptions and I am not comfortable with disruptive politics. I understand and support the need for protest. Protest is an essential ingredient of democracy but there are Members who are more comfortable with it that side, but I am not comfortable. I shall remember your fairness ...(*Interruptions*)...

श्री सभापति : प्लीज़। बैठ कर कोई कमेंट नहीं कीजिए। अननेसेसरी आखिरी दिन भी मेरे मुँह से ऐसा शब्द नहीं निकलना चाहिए।

SHRI JAWHAR SIRCAR: I shall remember your fairness both as a Minister--I have had the good fortune of having fair Ministers like you, Mr. Jaitley and Mr. Javadekar--and in the Chair. But, fairness comes with a certain degree of brutality. It is inevitable. I would only say that 73 is not an age to retire. There are temptations and many of allurements of retirement at an early age come from the people around you with intentions, good or otherwise. But, having said that, I would still say that you will continue to hold your head high and continue to contribute, and though the woods are lovely, dark and deep, there are miles to go before you sleep, and miles to go before you sleep. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: If you have tension, you will not be able to pay attention and have retention, and it will only be pretension! That is why, please don't have any tension in the House!

SANT BALBIR SINGH (Punjab): * "Many many thanks to you Sir. I came to this House for the first time and when I got an opportunity to speak for the first time in my language the words that you spoke in Punjabi at that time, "you spoke well" and that is being talked about not only in Punjab but in the entire world. These are our regional languages, our Gurus' languages and we needed to learn a lot from you but you are now demitting Office. I will definitely make a request that like the way you have given us a right to speak in Punjabi; every day these papers that are laid on the Table of the House, come in English & Hindi. So, we can get these translated in Punjabi from outside, but what we have to do, discuss and argue here, that we need in Punjabi. This is a request and while leaving, people give something. We are praying to you for this as this is not only our problem. It must be the difficulty of many others here but they have not spoken about it. I request that we should get those papers in Punjabi. Thank you very much Sir. May you be blessed!"

---

* English translation of the original speech delivered in Punjabi.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shrimati Vandana Chavan on behalf of all remaining women!

SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Sir, thank you very much. I was hoping that we get a chance. This House has seen many farewells but in the last ten years that I have been here, it has not been a farewell as sombre an atmosphere as this. Farewells and farewell speeches are, a lot of times, mere formalities. But this one is different. It is different only because of the person and personality that you are. You have given us so much love and affection that definitely we feel very much honoured and very much revered to you. Sir, you have been a disciplinarian. You have been very strict. Sometimes, you reminded us of a head master in a school. But, you know that the strictest teacher is the most loved one. Similarly, Sir, even though you are strict with us, you try to imbibe discipline in us. You are the most loved up to now. You have been witty with your repartees. You have been witty with the kind of rhymes in your sentences, which you just exhibited. You have been extremely passionate. That is what made you very different. You encouraged Members to speak in their mother-tongue, pushing them to attend Committee meetings, which sometimes we would slip. Your passion was seen even when one of my colleagues, Vijila Sathyananth, spoke about child pornography in her Zero Hour mention, there you immediately put an *ad hoc* committee in place under the Chairmanship of Shri Jairam Ramesh and you had it sorted out. This is the kind of passion that you have. Even when important issues were spoken about, your voice itself vibrated and showed that you were very concerned about that issue. Sir, you have been gracious. A lot of people have said that you have been a wonderful host. Not only you, your wife and your entire family have also been wonderful hosts whenever we came to your place. I had the opportunity and honour of inviting you to two functions. One was in Pune for the prestigious *Punyabhushan Puraskar* and the second was here, in Parliament Annexe, when some of us Parliamentarians, formed a group on children, and invited you to have a dialogue with the children and I saw, Sir, not just inside the House, but even outside the Parliament wherever you went, you attracted a lot of fan following and that makes you different. Sir, I also remember that during Covid times Pune was doing very badly. I can never forget that you had called me up to ask about my own welfare, my family's welfare and the welfare of the Punekars. I have never had an experience earlier like this. Even lately, when my name was not included in the six-Member panel, you were gracious enough to call me up and talk about your predicament, but thank you, Sir, you have been great to us. You have been a wonderful fatherly figure. You have been like an elder brother to

all of us, sisters. I specially wish you good health and I wish you the best for the new innings which is coming forth. Thank you, Sir.

SHRI P. WILSON (Tamil Nadu): Mr. Chairman, Sir, I am a new entrant to politics. When I came here, I was a senior advocate practising in the High Court and the Supreme Court, but when I saw you, I felt that you have all the good qualities of a judge and good qualities of fairness. You allowed equal opportunity, and you used to remind us that we have to do something for the people, that the people are watching us. We really feel that after seeing you, all politicians should train themselves as to how they have to behave inside this august House. Every time I see you, your endeavour is to uphold the dignity and the honour of this House. In fact, you have guided us on many occasions as to how we have to present ourselves when we speak on a Bill, when we speak even in Zero Hour and even on matters touching upon the nation. In fact, one thing is very common to us. I come from Tamil Nadu and, Sir, your second home State is Tamil Nadu. I feel that you are very close to the hearts of the people in Tamil Nadu and I pray that you should settle down in our home State. That is what I feel. Another thing is, you have touched our hearts and you have moved us with a lot of love and affection. On every birthday, I receive a call from you and you wish us. We have never seen a leader like you. We have never seen a Chairman like you. We are really moved by your good nature. In fact, I would only say that all of us have to carry forward whatever you have preached to us and whatever you have taught us and, certainly we will take it forward. I wanted to say, as my earlier speaker said, that we are going to miss you and I don't know whether anyone can occupy your place. Thank you very much, Sir.

THE MINISTER OF FISHERIES, ANIMAL HUSBANDRY AND DAIRYING (SHRI PARSHOTTAM RUPALA): * "Namaskar, Sir. Thank you very much for giving me an opportunity to speak on this occasion. Just because of you, I am speaking here in my mother tongue, Gujarati. For this, I am thanking you in Gujarati. Much has been spoken on this occasion in this august House. Hon. Prime Minister, Honourable Leader of Opposition and other distinguished members have spoken at length about their experiences with you and your career. I associate myself with them. I would not like to repeat it. Through you, I would like to draw the attention of the House regarding two aspects pertaining to you. I also would like to remind the people of

* English translation of the original speech delivered in Gujarati.

Gujarat specifically about these two aspects. One is your love and gratitude towards hon. Sardar Vallabhbhai Patel. As far as I know, you are personally a big admirer of Sardar Vallabhbhai Patel. You have installed the the portraits of Sardar Vallabhbhai Patel at your residence, in your office and at your official residence. As a Gujarati, I salute the admirers of Sardar. You had visited Somnath to offer your prayers. You wanted to accomplish two tasks the same time. The first, of course, was to worship Lord Somnath. And the second was to take a glimpse of Sardar Patel in the temple complex, who was one of the foremost devotees of Lord Somnath. I don't think there is any exaggeration in saying this. The current President of BJP, Shri J P Nadda is present in this August House. I want to remind him that during 1996-1997, there was an internal problem in our party. And the Gujarat chapter of BJP was passing through crisis. And today as a worker of Bharatiya Janata Party, I would sincerely and seriously like to bring it to the notice of this august House that at that time you came to Gujarat and stayed there for 15 days and enhanced our moral strength. You stood by us, gave us wisdom and strength. It is not an exaggeration to say that the capacity enhancement of the Gujarat State Bharatiya Janata Party is because of the motivation provided by you at that time. You had a hectic schedule at that time. In the evening, you briefed all the MLAs about all the developments that had taken place throughout the day. Your briefing sessions used to be in English. And our knowledge of English was quite limited. So, Shri Jay Narayanbhai Vyas used to interpret your English speech into Gujarati. We have a strong memory of those days. And hence today I feel like mentioning a couplet in Gujarati:

धन को ऊँडा नव धरे, रण में खेले दांव
भागी फौजू भेळवे, ताको रंग चढ़ाव

The one who does not hide the wealth, the one who plays smart tactics in the battlefield, the one who unites the separated armies, is the one who is worthy of praise.

At that time, you had given guidance to unite our separated armies. We offer our gratitude for that. Sir, those who have enjoyed your hospitality can never forget those memorable moments throughout their lives. The warmth and love extended to guests at your house is incredible. Dulabhaya Kaag, the eminent Gujarati Poet has written a beautiful poem on hospitality. He would not have thought that the hospitality which he is describing in his poem will come to life when someone visits the home of the Vice-President of India.

हे जी तारा आँगणिया पूछिने जो कोई आवे रे, आवकारो मीठो आपजे रे जी।

Do extend a warm welcome to anyone who comes to meet you, putting in a lot of effort.

You are a living example of this beautiful poem by Kaag Bapu. Your hospitality is the mirror image of this poem. I wish you Ram-Ram, Jay Somnath. It is the month of Shravan and I offer my prayers to Lord Somnath that he may give you good health, a very long life and you may always keep guiding us through your wisdom. Ram-Ram."

MR. CHAIRMAN: Rupalaji, you spoke very well. Thank you.

SHRI JAIRAM RAMESH (Karnataka): Sir, there have been two distinguished Indians who have occupied the position of Vice-President and Chairman of the Rajya Sabha who hail from Nellore district of Andhra Pradesh. The first is a man whose photograph we see every day and whom we take it for granted today, but he is one of the great institution builders of modern India, is, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. And, the second to leave a distinctive mark on Indian political life is * "our elder and respected Muppavarapu Venkaiah Naidu Garu." Sir, five years ago, when you took over, you started your innings characteristically by saying, 'If you cooperate, I can operate.' Today, after five years of cooperation and operation, it has become a time of separation. *...(Interruptions)...* It is a very emotional moment for all of us because you have conducted this House in a very unusual way. People have praised you for allowing all languages of India to be spoken in this House; that is a remarkable achievement. People have congratulated you for giving youngsters equal opportunity; that is a remarkable achievement. But, Sir, there are other remarkable achievements of yours, which have struck in my mind. You are the only Chairman who has adjourned the House while standing up; you are the only Chairman who has adjourned the House as soon as he has sat down; and, you are the only Chairman whose decisions have, sometimes, mystified not only the Opposition but also the ruling party. So, you have been very fair in spreading your largesse. For that, I commend you because, although you have come from a political party, been president of a political party, you have not allowed that background to influence any decisions you took. Some of your decisions baffled the Treasury Benches, that they came to me to ask me whether I have any inside knowledge of why you took certain

* English translation of the original speech delivered in Telugu.

decisions. So, I think that is a hallmark of a true Chairman that you have treated all of us equally, given all of us equal opportunity, and conducted the proceedings of this House, at very tense moments, in a spirit of wit and humour.

Sir, Mr. Derek O'Brien, my friend, was very unkind to you. He reminded you of some of your speeches you made while you were sitting here. Sir, I am tempted to add to this unkindness, because I remember the five hour ordeal that I had to undergo in an argument with you on 20th of February, 2014, when the Andhra Pradesh Reorganisation Bill was being discussed on the floor of this House, and the last word, Sir, belonged to you. After the Prime Minister had said that "we will give special category status to the State of Andhra Pradesh for five years; you got up and said, When our Government comes, we will give it for 10 years." I am sorry, Sir, that I have to remind you of this promise. But this is part of life. We are here; we are there; some of us migrate to where you are sitting. I think it is a remarkable tribute to your skills that you have occupied all positions of this House and other Houses. Sir, everybody has remarked about your sense of humour. I know many people with a sense of humour but their sense of humour is directed at somebody else. You are one of the very few I know who directs his sense of humour at himself. I remember, after three terms in the Rajya Sabha in Karnataka, I had a conversation with you. I said to you, "Sir, why aren't you coming back for the fourth term from Karnataka?" I went to Bangalore and I saw people shouting * "enough of Venkaiah," and, you said to me immediately, "No, no; they say, *"we want Venkaiah." And, very soon, you came back to this House from Rajasthan. So, your sense of humour is directed at yourself, not necessarily at somebody else. That is why, the other day, at your house, I remarked, "Many people aspire to be great in public life, but you have aspired to be good." And, you will be rememberd long after the great men have been forgotten because you are a good man, because you have been a kind man, you have been a large-hearted man. Finally, Sir, you are moving to 1, Tyagraj Marg. I want to make a special request to you. You have been a champion of Indian languages. Who is this Tyagraj? In Tamil, he is Thyagaraja. In Telugu, he is Tyagaraja. Why is he made Tyagraj in Delhi? This is what 'Hindi imperialism' does. This is what 'Hindi zealotry' does. And, Sir, when you go to occupy your house, you will find, it is not 'Tyagaraj 'as one word -- 'Tyag' and 'Raj'. Nobody in 'Raj' does any 'Tyag', Sir. It is 'Tyagaraja'. So, I hope, you will ensure that the name of the house that you will occupy for the next innings of your life will be 'Tyagaraja Marg' and not 'Tyagraj Marg'. ...(Interruptions)...

---

* English translation of the original speech deliverd in Kannada.

SHRI TIRUCHI SIVA: Sir, I associate. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: Thank you. I am told that this has been there for long. Definitely, I will change it. Don't worry. 'Tyagaraja' is a great musician. The people in Tamil Nadu, in Telugu and in Karnataka love his music, and he is a great man. ...(Interruptions)... He is now becoming international also -- Tyagaraja. So, we will all be remembering 'Tyagaraja' also. I will also try my bit to highlight his contribution to the music world across the country.

About 'humour', I would like to tell you Members, before I leave this House at the end of the day or whenever the House is going to be adjourned -- 10th is my last day -- that 'humour' is very much required. If 'humour' and 'grammar' are combined together -- 'grammar' means 'subject'; not the English grammar -- then you will be 'glamorous'. That has to be understood by all of you. ...(Interruptions)... If there is 'humour', 'grammar' and 'glamour', then people will pay more attention to you and they will be able to take you seriously. If you speak in a very serious language which is not understood by people and which only Harvard and Oxford people can understand, then it will not reach the common man. That is why I try to sometimes add lighter one-liners. There is no other intention.

Hon. Members, before I go to Parliamentary Affairs Minister and also the Leader of the House, I would like to say that the Finance Minister and a couple of Ministers also want to speak. We should give them an opportunity also, but there are other names also. But if I take the names, then there is a request also from both sides. There is one Bill which is pending, which has to be disposed of today. Then we have a function also.

THE MINISTER OF FINANCE; AND THE MINISTER OF CORPORATE AFFAIRS (SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN): Sir,...

MR. CHAIRMAN: I will give an opportunity to you. So, please bear with me. Do not think otherwise. I know the love and affection you have. Now, we will hear our Parliamentary Affairs Minister, Shri Pralhad Joshi. Will you speak in Kannada?

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS; THE MINISTER OF COAL; AND THE MINISTER OF MINES (SHRI PRALHAD JOSHI): Yes, Sir. You know, Sir, you have a lot of connections even today in Karnataka. With your permission, I would like to

speak in Kannada. * You share a very special relation with the state of Karnataka, and even today you are well-connected with various people from the state.

Sir, the way you have performed your duties as Vice-President and as Chairman of Rajya Sabha, it offers immense inspiration to the present as well as the future generations.You have been a constant source of motivation and encouragement. Besides, you have been a mentor and a guide to all those serving the people of the country, be it in States or here in Parliament.

I remember those days when you were serving as the Party President and I used to be the Vice President of our Party. You would call me and talk with utmost affection and respect which you also extended invariably to each and every District President. One habit that we all need to learn from you and inculcate in ourselves is punctuality. Punctuality is a prominent trait of your personality. Any programme or meeting that you attend as Party President or as a Minister, your presence always meant to be well on time and required us to be there 10 minutes in advance. People attending those meetings would often say on a lighter note that the Headmaster is coming and, therefore, we have to be there a little early. This practice made people punctual and more responsible towards their work and duties. Even as a Headmaster, we can say that you were profusely strict with regard to the discipline, and equally soft and affectionate with your words.

Many of our colleagues and senior members have talked about your love for native languages. Sir, you have always exhibited immense love for your mother tongue and with the same love and respect, you speak and endeavour to promote other languages as well. Along with the language, you always wore the traditional South Indian dress in bright white colour with the same pride. Only during winters, your traditional dresses were a bit different.

Sir, you never neglected your language, your traditional dress code and your native place, Nellore. Even after being an occupant of this highly prestigious post, you called me a couple of days back to work on a pending project in Nellore. Besides, your NGO is also doing incredible work for the betterment of people.

Sir, your relation with Karnataka is very special. I have seen you as All India secretary, as All India President and as a minister and also after assuming the post of the Vice President of India, even to this very day, whenever you are in Bengaluru, you visit Janardhan Hotel. It reflects your simplicity when you visit this small hotel. You visit it just like a common man where people can walk up to you and talk without any restriction or any prior appointment. Oh yes! You get amazing Masala Dosa

---

* English translation of original speech deliverd in Kannada.

there. Moreover, it was really a very bold and audacious decision on your part, when you declined the offer of the post of a Minister and instead preferred to accept the responsibility of the post of president of a national party.

Sir, you have tremendous knowledge about the unification of India and leaders like Sardar Patel, and you have written numerous articles about the same.

In those days, you spoke in a rapid and rhythmic manner and I used to translate your speeches into Kannada. While rendering simultaneous interpretation of your speeches, I would find it quite challenging to be able to keep up with your pace. Your speeches had a combination of both humour and seriousness touching upon crucial issues at the same time. You have been a source of inspiration to party workers and many more people beyond the party spectrum. I have always known you as a leader with a charismatic personality. I look forward to receiving your guidance in the future. After this, you will enter into a new phase, and we hope that you will continue to guide us in the right direction with the same enthusiasm and vigour as has been the case so far. I wish you all the very best. Namaskar!

MR. CHAIRMAN: Now, Shrimati Nirmala Sitharaman.

SHRIMATI NIRMALA SITHARAMAN: There was a correction; it is all right.

MR. CHAIRMAN: In the Bill? Okay.

श्री उपसभापति (श्री हरिवंश): सर, आपके कार्यकाल के समापन के अवसर पर आपसे जो कुछ सीखा, जो हमारा निजी अनुभव रहा, उस पर मैं बड़े भरे मन से कहने की अनुमति चाहूंगा। आपकी पहली तस्वीर जो मेरे ज़ेहन में, मेरी स्मृति में दर्ज है, उस समय मैं युवा विद्यार्थी था। जयप्रकाश जी के घर पर, एवरीमैन मैगज़ीन में एक विशाल रैली के साथ आपकी तस्वीर थी, जिसमें आप जयप्रकाश जी का हाथ पकड़े हुए थे और आंध्र प्रदेश की वह तस्वीर मेरे ज़ेहन में बैठी, तो स्पष्ट हुआ कि बदलाव के लिए संघर्ष करने वाले युवा के रूप में, छात्र नेता के रूप में आपने लीक से अलग हटकर, भीड़ से अलग हटकर जीवन का रास्ता चुना है। सर, हमने बचपन में यह सुना था कि लीक से हटकर चलने वाले ही नया रास्ता बनाते हैं। आपने इस धारणा और मान्यता की पुष्टि अपने जीवन से की। हम लोगों ने, माननीय दो सांसदों ने रॉबर्ट फ्रॉस्ट की मशहूर कविता 'Woods are lovely' का उल्लेख किया, पर जब मैं आपके जीवन से जोड़कर देखता हूं, तो मुझे रॉबर्ट फ्रॉस्ट की एक और कविता याद आती है - 'The road less travelled'.

सर, आपने लीक छोड़कर कैसे रास्ता बनाया और हम सबको वह कैसे लगातार प्रेरित करेगा? आंध्र में जब आपने राजनीतिक जीवन में पांव रखा, तो उस विचारधारा को चुना, जिसको मानने वाले तब शायद वहां नहीं थे। आपका जो प्रिय खाने-पीने का शौक रहा है, उसका भी अनुपालन वहां नहीं होता था, यह भी हम सबने सुना। फिर भी आपने अपनी राजनीतिक यात्रा की

यह मानकर शुरुआत की कि हम अपने कन्विक्शन से नया रास्ता बनाएंगे। सर, यही जीवन का मर्म है, 'The road less travelled', उससे चलकर ही आपने कन्विक्शन की राजनीति से जीवन के प्रति समर्पण सीखा। अगर कन्विक्शन राजनीति के प्रति हो, अपनी आइडोलॉजी और मान्यताओं के प्रति हो, तो कुछ भी नामुमकिन नहीं है। यह आपने सिद्ध किया है और यह आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करेगा। सर, मैं अपने निजी अनुभव के बारे में कुछ चीज़ें कहना चाहूंगा। सर, मैं सांसद के रूप में आया, तो आपके साथ कंसल्टेटिव कमेटी में काम करने का पहला रूबरू मौका मिला। मेरा आपसे कोई परिचय नहीं था, हालांकि मैं आपको बहुत पढ़ता और जानता रहा हूं। बिना कहे मैंने पहली मीटिंग से समझ लिया कि आपके साथ काम करने के लिए अच्छी तरह से होम वर्क करके आना जरूरी है। बगैर पूरा होम वर्क किए, बेहतर काम, जिसकी अपेक्षा आप करते हो, वह संभव नहीं है। तेलुगू नए वर्ष के अवसर पर एक बैठक थी, आपने कैसे उस दिन प्रतीक के रूप में इस्तेमाल होने वाली घर की चीज़ों, गांव की चीज़ों को अपने घर से मंगवाया, सारे सदस्यों को उत्साह से, जो आपके जीवन का, व्यक्तित्व का हिस्सा है, खिलाया। उससे मुझे संदेश मिला कि देश की भारतीयता की मिट्टी स्वस्थ रीति-रिवाज़ों, परंपराओं, संस्कृति और भाषा के प्रति आपका कितना गहरा लगाव है। आधुनिकता की जो कथित आंधी और देश की जो एलीट क्लास है, उसके मुकाबले देश कैसे इन चीजों से ताकत ग्रहण कर सकता है, यह हमने आपके साथ रहकर जाना।

सर, जब मैं उपसभापति के रूप में आया, तब मुझे आपके साथ कुछ और नजदीकी रूप में काम करने का अवसर मिला। सर, मैं कहना चाहूंगा कि it would have been very difficult for me to carry out my responsibilities as a Deputy Chairman without your guidance, support, advice and encouragement. हर क्रिटिकल मूवमेंट में जिस तरह से आपका सपोर्ट मार्गदर्शन मिला, वह मुझे हमेशा स्मरण रहेगा, प्रेरित करेगा और राह दिखाएगा। It was a privilege for me to work with you. कुछ चीज़ें, जो बगैर आपके कहे, आपके व्यक्तित्व से सीखीं, उनका मैं उल्लेख करना चाहूंगा। आपके आचरण से, कार्यशैली से - समय की पाबंदी और जो गांधीयन लीगेसी थी, जो गांधी जी कहा करते थे कि 'Indiscipline is violence', उस तरह आपने किस तरह स्व-अनुशासन को जीवन में उतारा, देश के प्रति आपका लगाव, मिट्टी के प्रति लगाव, यह हमने जाना। आपने राज्य सभा में हमेशा कहा, हम सबको निर्देश दिया कि नये सदस्यों का लगातार उत्साहवर्द्धन हो। यदि समय हो, लोग देर तक बैठने के लिए तैयार हों, तो उन्हें बहस के लिए पर्याप्त समय मिले, मुद्दे उठाने और बोलने का मौका भी मिले।

महोदय, पैनल ऑफ वाइस चेयरमैन में नये सदस्यों को लाना, उन्हें सदन चलाने का मौका देना एवं आपके पार्लियामेंटरी विट और ह्यूमर के बारे में भी बताया गया। मैं मानता हूं कि यह आपमें गिफ्टेड है, यह आपका स्वाभाविक नेचर है। आपमें शब्दों से खेलने और शब्दों को साधने की अद्भुत कला और क्षमता है। एक पंक्ति में अपनी बात कहने की कला - यह साधना है। आपका तनाव के क्षणों में भी लाइटर वेन में महत्वपूर्ण बातें कहने का अंदाज है। सर, जब मैं एक सदस्य के रूप में नीचे बैठता था, तो मुझे याद है कि आपने एक चीज़ कही थी, जो मेरे दिमाग में चस्पा है और हम आने वाले समय में संसदीय जीवन की मर्यादा को मानने के लिए उसे हमेशा अपनाएंगे, वह वन लाइनर हमेशा काम करेगा। सर, आपने कहा था , "If you are not well on facts, you will be in the Well of the House." सर, एक कहावत सुनी थी, यह शायद रस्किन द्वारा कही गई

है, "Thoughts that breathe, and words that burn" - विचार जो साँस लेते हैं, यानी जीवंत विचार और शब्द, जो उद्वेलित करते हैं। सर, मैं आपके वैचारिक लेखों को लगातार पढ़ता रहा। आप सदन के संबंध में, खास तौर से संसदीय परंपराओं के संबंध में जिस तरह से थॉट प्रोवोकिंग लिखते रहे हैं, मैंने उनमें से एक-एक शब्द को ग्रहण करने की लगातार कोशिश की है। सर, हमने निजी बातचीत पर हमेशा पाया कि rules, conventions, practices and precedents, जो इस हाउस में हाउस बनने के बाद रहे हैं, उनके विपरीत एक भी चीज़ न हो, और आपने वह होने नहीं दी - यह मैं कह सकता हूं।

सर, संसदीय नियमों, कामों के प्रति आपकी मर्यादा, उन्हीं के अनुरूप चलना और श्रेष्ठ बहस हो, तो उस दिन आपकी प्रसन्नता और हाउस न चले, तो उस दिन आपकी जो आत्मपीड़ा थी, मैं उसका साक्षी रहा हूं - मैं यह भी कह सकता हूं।

सर, इसके साथ ही साथ कोविड-19 के चुनौतीपूर्ण और न भूलने वाले क्षणों में आपने हम सभी को किस तरह से सावधानी से काम करने और हमारे जो फर्ज़ हैं, उनको निभाने का लगातार हौसला दिया, प्रेरित किया तथा कोविड के नियमों को हम अपने जीवन में किस तरह से स्व-अनुशासन से उतारें, इसके लिए भी प्रेरित किया।

सर, मैंने आपमें हमेशा एक नयापन, यानी चीज़ों को नये ढंग से सोचने का तौर तरीका पाया। मैं इनोवेशन पर आपके लिए कह सकता हूं कि आप man of ideas हैं। सर, मैं बहुत संक्षिप्त में बताना चाहूंगा कि मैंने आपकी कार्य-शैली यहाँ किस-किस रूप में देखी। पहली - Rules of Procedure, जिनका ओरिजिन फंडामेंटली कोलोनिअल समय का है, जिनमें आज के समय की जरूरत के अनुरूप सुधार की जरूरत है, आपने उन्हें मॉर्डनाइज़ करने के लिए रूल्स रिव्यू कमेटी का गठन किया। इसने अपनी रिपोर्ट में बड़े अच्छे सुझाव दिए हैं और माननीय एलओपी ने भी इसका उल्लेख किया है। सदन के साथ-साथ राज्य सभा की समितियों के कामकाज में कैसे सुधार हो - आपकी लगातार उस पर नज़र रखना, उसका उल्लेख करना, बैठकों में उपस्थिति कैसे बढ़े - इसकी निरंतर कोशिश और मोटिवेशन देना, मैं इन सभी चीज़ों का साक्षी हूं।

सर, आपके यहाँ नये प्रयास रहे। सदन व सचिवालय पेपरलेस हों, इसके लिए टेक्नोलॉजी के उपयोग में उल्लेखनीय प्रगति, सदन में डिजिटाइजेशन के काम को गति, ई-ऑफिस सिस्टम में उल्लेखनीय प्रगति - क्योंकि बदलते समय में हम टेक्नोलॉजी से अलग होकर नहीं चल सकते, समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता, हम इसमें कैसे आधुनिकता और बदलाव के साथ गति रख सकें - आपने हमेशा इसके लिए प्रेरित किया।

सर, भारतीय भाषाओं के उपयोग के बारे में बहुत कहा गया है, लेकिन मैं इस संबंध में एक उल्लेख करना चाहूंगा। भारतीय भाषाओं के जो प्रचलित शब्द हैं, जो यहाँ हिंदी में वाद-विवाद में कठिन शब्द लगते हैं, वे कैसे इस्तेमाल किए जाएं, आपने उस पर एक कमेटी बनाई थी। उस समिति ने इस पर महत्वपूर्ण काम किया और उसमें अनेक भाषाओं के काफी शब्द लाए गए। राज्य सभा सचिवालय की कार्य प्रणाली में सुधार के लिए भी समिति का गठन हुआ।

सर, आपके जीवन का वह संदेश हम जैसे लोगों के लिए हमेशा प्रेरणा के रूप में रहेगा कि आप गाँव से सर्वोच्च पद तक पहुंचे, आपके परिवार में कोई राजनीति में नहीं रहा, आपने साइकिल से स्कूल, कॉलेज की यात्रा की, आप अटल जी के भाषणों से प्रभावित हुए, आपने एबीवीपी की लीडरशिप की, फिर भारतीय जनसंघ में युवा नेता रहे, यानी एक साधारण कार्यकर्ता

से भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष तक विभिन्न मंत्रालयों का दायित्व, आपका उन्नीस वर्षों का इस सदन का अनुभव, फिर राज्य सभा के चेयरमैन और देश के उपराष्ट्रपति तक पहुंचना लाँग, डिस्टिंग्युइश्ड पब्लिक लाइफ का उल्लेखनीय पड़ाव और बेदाग करियर।

सर, मैं अंत में दो चीज़ें कहकर अपनी बात खत्म करना चाहूंगा। सर, आपकी ह्यूमन एप्रोच, आपकी सेंसिटिविटी और अनुशासन - आपके व्यक्तित्व के ऐसे अनेक पहलू हैं, जो हमें आजीवन संबल देंगे। काशी विद्यापीठ के दीक्षांत समारोह में देशरत्न डा. भगवान दास ने 1925 में त्रिउपनिषद् कहकर यादगार उल्लेख किया है, उसकी एक पंक्ति है, 'कभी संशय हो कि यह काम अच्छा है या नहीं तो जो स्वस्थजन आचरण करते हों, उनका आचरण करना।' ऐसी घड़ी में जब भी आत्मद्वंद हो, उसमें आपके बताये रास्ते हमें रास्ता दिखाएंगे।

अन्त में, राज्य सभा के 249वें सत्र के दौरान आपने कहा था, यह सीख हमें जब तक यहां हैं, अवश्य ज़ेहन में रहेगी। Sir, you said, "As the House of Elders, we need to lead by example. It is a privilege that people bestowed on us. The expectations are high. Our responsibilities are onerous. We can ill-afford to regret over lost opportunities that we had. If we fail, we fail our people, we fail our nation." ईश्वर से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों, आपकी सेहत हमेशा अच्छी रहे, आपकी यह सक्रियता हमेशा बनी रहे, देश और हम सबका आप इसी तरह मार्गदर्शन और उत्साहवर्द्धन करते रहें, बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Leader of the House, Shri Piyush Goyal.

सभा के नेता (श्री पीयूष गोयल) : माननीय सभापति महोदय, आज हमारे कई सांसद मित्रों ने अपनी-अपनी बातें रखीं। कई मित्र ऐसे हैं, जिनको बोलने का मौका नहीं मिला। मैं कोशिश करूंगा कि हम सब की भावनाएं आपकी तरफ जो हम सब के दिल में मिक्स्ड फीलिंग्स हैं, उनके बारे में थोड़ी सी अपनी बात रख सकूं।

वास्तव में ऐसे दिन हम सब के लिए तकलीफ होती है कि एक तरफ अच्छी यादें हैं, आपके जीवन की अच्छी चीज़ें ध्यान में आती हैं, आपके पांच वर्ष के कार्यकाल की, आपके सफल और एक प्रकार से ऐतिहासिक कार्यकाल की और मैं कहूंगा कि क्यों मैं उसको ऐतिहासिक कहता हूं। इसकी खुशी भी हम सब के दिल में है, साथ ही साथ आपकी अनुपस्थिति भी हम सब को तकलीफ देती है कि अब आने वाले अगले सत्र से आप यहाँ नहीं रहेंगे। जिस निष्पक्ष तरीके से आपने इस सदन की कार्यवाही चलाई, उस सब को हम मिस करेंगे, पर यह तो प्रकृति का नियम है, समय चलता रहता है। पिछले पांच वर्षों में जिस प्रकार से आपने सुचारू रूप से राज्य सभा चलाई है, सदन की गरिमा बढ़ाई है, उसके बारे में हम अच्छी यादों के साथ आज विदाई लेंगे। मैं समझता हूं कि हम सब के व्यक्तिगत अनुभव भी हैं और सामूहिक अनुभव भी, वे गत पांच वर्षों के बहुत अच्छे रहे हैं।

आपके कार्यकाल में बहुत महत्वपूर्ण निर्णय लिए गये, जिनका प्रभाव भारत की राजनीति पर और हमारे इतिहास में सदैव रहेगा। आपकी अध्यक्षता में इस सदन में बहुत क्रूशियल लेजिस्लेटिव बिजनेस, विधेयक पारित किये। चाहे गरीब कल्याण हो, सामाजिक सुरक्षा हो, ईज़ ऑफ डूइंग बिज़नेस या ईज़ ऑफ लिविंग हो, राष्ट्रीय एकता की बात हो, महिलाओं की सुरक्षा के सम्बन्ध में विधेयक हो, युवाओं के बारे में चर्चा हो, स्पोर्ट्स हो, इकोनॉमिकली वीकर सैक्शंस को

रिज़र्वेशन देने का काम आपके कार्यकाल में किया गया। ट्रांसजेंडर्स का एक बहुत महत्वपूर्ण बिल आपके कार्यकाल में पास किया गया। किसानों के लिए, कामगारों के लिए, समाज में शोषित, वंचित लोगों के जीवन में एक नयी उमंग और उत्साह देने का काम इस सदन ने आपके कार्यकाल में किया और मैं मानता हूं कि ये सब विधेयक, ये सब काम स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जायेंगे, जब इस सदन का और भारत का इतिहास लिखा जायेगा।

आपका सान्निध्य मुझे बहुत छोटी आयु से मिला। आपके मार्गदर्शन में काम करने का मौका पहले पार्टी कार्यकर्ता के रूप में, फिर अलग-अलग दायित्वों को निभाते हुए, अलग-अलग चुनावों में काम करते हुए और फिर आपके साथ एक जूनियर मिनिस्टर के रूप में आपका मार्गदर्शन मिला। आपने बताया कि कैसे अलग-अलग कामों में हमें काम करना है, कैसे माननीय प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के विज़न को आगे लेकर जाना है, जिस प्रकार से इस देश का भविष्य हम बनाना चाहते हैं, किस प्रकार से इस देश का भविष्य देखना चाहते हैं, उसमें आपने मुझे बहुत कुछ सिखाया, बहुत कुछ समझाया। समय-समय पर मुझे आपके पास आने का मौका मिला। मुझे आपसे सीखने का मौका मिला। मुझे आज याद आता है कि 2010 में जब मैं पहली बार सांसद बना, तब मैं सेकंड लास्ट रो में ठीक सामने बैठता था। मुझे सांसद बने तीन-चार दिन ही हुए थे, जब प्रणब दा ने इरडा और सेबी के विवाद के बारे में एक बिल इंट्रोड्यूस किया था और हमारी पार्टी के व्हिप से मुझे बोलने का आदेश आया। तब मैं थोड़ा नर्वस था, मुझे पार्लियामेंट में चार दिन ही हुए थे। मेरे पास तैयारी का समय भी कम था। तब आपने मुझे बुला कर जिस प्रकार से मेरा हौसला बढ़ाया, जिस प्रकार से हिम्मत दी, जिस प्रकार से समझाया कि क्या विषय रखा जाए, कैसे रखा जाए, क्या तैयारियाँ की जाएँ, किन लोगों से सलाह-मशविरा किया जाए, उससे वास्तव में मेरे लिए मेरी मेडेन स्पीच देना बहुत सरल हो गया। आजकल तो मेडेन स्पीच में भी समय की पाबंदी रहती है। मुझे ध्यान है, उस समय समय की पाबंदी न होने के कारण मैं विषय से ऐसा प्रभावित हो गया कि शायद 45 मिनट तक मेरी मेडेन स्पीच चली। एक प्रकार से एक नए सांसद की जो हिचक रहती है, वह हिचक मेरे दिल से निकल गई और आगे के लिए मेरे लिए सांसद के रूप में काम करना सरल हो गया।

(**उपसभापति महोदय** *पीठासीन हुए*)

आपके जीवन के बारे में कई माननीय सांसदों ने कई बातों को बताया, सबने अपने कई स्मरण शेयर किए। उपसभापति महोदय, आपने जय प्रकाश नारायण जी के समय से शुरू हुए इनके राजनीतिक प्रवास के बारे में विस्तार से बताया। माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी माननीय वेंकैया नायडु जी के अपने कई सारे व्यक्तिगत अनुभवों के बारे में हम सबको अवगत कराया। लेकिन वेंकैया जी के जीवन के तीन पहलू, जिसने हम सबको कभी न कभी टच किया है, उनमें से एक है ट्रैवलिंग, दूसरा है टॉकिंग और तीसरा है ट्रेनिंग। उनको प्रवास करने में बहुत रुचि रहती है। मैं समझता हूँ, वे अलग-अलग दायित्व निभाते हुए देश के कोने-कोने में गए हैं। हम सबने उनको अपने-अपने क्षेत्र में देखा है। एक प्रकार से देश की जमीनी वास्तविकताओं के बारे में माननीय वेंकैया नायडु जी ने बहुत गहराई से चिंतन किया है, चयन किया है और समझा है, जिसके कारण उनका इतना लंबा राजनीतिक जीवन सफल रहा।

इसी प्रकार से ओरेटरी के बारे में आज कई माननीय सदस्यों ने बात की। उनके वन लाइनर्स, उनका विट, उनका ह्यूमर, ये सभी को आकर्षित करते हैं। जिस प्रकार से वे हम सबको प्रेरित करते हैं कि आप मातृभाषा में बात करिए, उसकी बहुत सारी चर्चा हुई, बल्कि वे स्वयं भी एप्रिशिएट करते हैं, जब कोई सदस्य मातृभाषा में बात करते हैं। मुझे याद है कि जब हमारे नए माननीय सांसद, संत बलबीर सिंह जी ने अपनी स्पीच दी, तो वेंकैया जी ने तुरंत कहा - "तुसी चंगा बोलेया"। इसी प्रकार से आज भी परशोत्तम जी और प्रहलाद जी को मूड आ गया कि हम भी मातृभाषा में अपनी फेयरवेल स्पीच दें। एक प्रकार से वेंकैया जी बहुत ह्यूमरस तरीके से बातचीत तो करते ही हैं, वे दूसरों को भी प्रभावित करते हैं कि वे हिम्मत से बात करें, अपनी बात अच्छी तरह से रखें, पर बड़े शालीन तरीके से रखें। उनका आग्रह रहता है कि शालीनता खराब नहीं होनी चाहिए। वाद-विवाद शब्दों का हो सकता है, मतभेद हो सकता है, लेकिन मनभेद न किया जाए। मैं समझता हूँ कि यह उनकी एक विशेषता रही कि उन्होंने कोशिश की कि साथ में मिल कर सदन सुचारु रूप से चलता रहे, अच्छे तरीके से चले।

तीसरा, मैंने ट्रेनिंग की बात की। व्यक्ति निर्माण, यह शायद इनके स्वभाव में ही है। कोई भी विषय हो, कभी किसी की स्पीच भी चल रही हो, तो माननीय वेंकैया जी बीच में कुछ न कुछ सुझाव देंगे कि क्या और कैसे बोलना चाहिए, क्या शब्द इस्तेमाल करना ठीक है या नहीं है।

(**सभापति महोदय** *पीठासीन हुए*)

एक कन्टिन्युअस टीचर का जो इनका स्वभाव है, लोगों को ट्रेन करने का जो स्वभाव है, मैं समझता हूँ कि हम सभी को इसका अलग-अलग समय पर लाभ मिला और यह लाभ जिन्दगी भर हम सब माननीय सांसदों के साथ रहेगा। माननीय सभापति महोदय, आपके नेतृत्व में सदन की उत्पादकता के बारे में अभी माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी उल्लेख किया। 2010 के बाद से इस सदन की सबसे अधिक उत्पादकता 2020 में, 82.27 प्रतिशत रही है, जो 2010 के बाद, आपके नेतृत्व में इस सदन की हाइएस्ट प्रोडक्टिविटी रही।

सर, अभी कई माननीय सदस्यों ने आपकी पंक्चुएल्टी के बारे में बात की। एक तरीके से यह बहुत अच्छी बात है कि आप बहुत पंक्चुअल हैं, हर चीज़ को समय पर करते हैं, पर राजनीतिक जीवन में कई बार हमें इससे तकलीफ भी होती है। हमारी बीएसी की मीटिंग में, लीडर ऑफ दि अपोज़िशन और मैं, जब हम दोनों पहुंचते हैं, तो हमसे पहले ही आप पहुंच जाते हैं और कई बार तो समय से पहले ही मीटिंग शुरू करने का आपका उत्साह भी रहता है। आपसे हमें यह सीखने को मिला कि पंक्चुएल्टी कितनी महत्वपूर्ण है। मैं समझता हूं कि यह भी आपका ट्रेनिंग देने का एक तरीका है कि पहले आप स्वयं उसे प्रैक्टिस करते हैं, जो हम सबको करने के लिए बताते हैं। आपकी कोशिश रहती है कि हम सभी अच्छी तरह से काम करें। आपने समय-समय पर सांसदों और विधायकों के लिए ट्रेनिंग सैशंस भी किए, वर्कशॉप्स भी चलाए, जिनका हम सभी को लाभ मिला है।

सर, मेरा मानना है कि आपकी यह जो जीवन यात्रा है, देश के प्रति आपकी जो निष्ठा है, इसने हम सबको एक अच्छी मिसाल दी है और हम सबके लिए यह एक बहुत अच्छा उदाहरण रहेगा। नये मेम्बर्स भी आपकी संसदीय यात्रा को जब पढ़ेंगे, सुनेंगे और देखेंगे, तो उनको भी अपना

कार्यकाल चलाने में बहुत अच्छी सीख मिलेगी और एक अच्छे उदाहरण के रूप में वे आपके काम से सीखेंगे।

सर, इस उच्च सदन ने अपकी निपुणता से, आपकी राजनीतिक कुशाग्रता से, आपकी मैनेजमेंट स्किल से और जिस प्रकार से आपने सदन को चलाया, आपसे बहुत कुछ सीखा है। हम सब आपके प्रति, आपके नेतृत्व के प्रति कृतज्ञ हैं। हम सभी आपकी लम्बी आयु और अच्छे स्वास्थ्य के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आप आगे भी हम सबको मार्गदर्शन देते रहेंगे और हम सबको अपना प्यार देते रहेंगे, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापति : धन्यवाद, पीयूष जी।

मित्रो, जैसा मैंने शुरू में ही कहा, हालांकि समय का अभाव था, लेकिन सब पार्टीज़ कवर हो गई हैं। उनके अलावा और भी कुछ माननीय सदस्य बोलना चाहते थे, लेकिन हमारे पास अभी उतना समय नहीं है। अभी हमें एक बिल भी लेना है और शाम को कार्यक्रम भी है, इसलिए मैं आपमें से कुछ लोगों को बोलने का मौका नहीं दे पाया हूं, इसको आप अन्यथा मत लीजिएगा।

अभी आते समय नागालैंड की एक सदस्य बहन, श्रीमती फान्गनॉन कोन्याक ने मुझे यह अंगवस्त्र दिया है। यह मुझे अच्छा लगा, इसलिए मैंने यह पहना है, इसमें और कोई अर्थ निकालने का प्रयास मत करिएगा।

Mitron, I don't want to make a long speech. I will be speaking anyhow in the evening meeting also. But these will be my last remarks. I don't know whether we are going to continue the Session or not. It will be decided today. I think today is the last day of the Session. Keeping that in mind, I will just make a few observations.

We are the largest parliamentary democracy in the world. We are very fortunate that our forefathers, the Constitution-makers and the great freedom fighters have given their life and their best to the country and gave us the great Constitution and this parliamentary democratic system. Nobody has forced it on us. We have taken it on ourselves. In a parliamentary democracy, we have the Parliament means the Upper House and the Lower House; then we have Legislative Assemblies and the Legislative Councils, wherever they are; and then we have the local bodies, the panchayati raj institutions. These three tiers are very important. In this, we being the Upper House, the House of Elders, we have a greater responsibility. The entire world is watching India. India is on the rise. India is on the move. Keeping that in mind, I only appeal to the Members of the Rajya Sabha and to those who are going to come to this House in future, to maintain decency, dignity and decorum so that the image and respect of the House is maintained and people will be receptive to show us, to hear us and also to follow our advice. This is my advice to all of you. As I told you, students, rural people, ordinary people, etc. will be watching the parliamentary proceedings. That is why, sometimes, I have to intervene, I have to be strict and also I have to take not a happy decision of naming some Members. Otherwise, it gives me

no enjoyment to take such extreme action. I have no ill-will against anybody or any party. On the day, when I was selected to be the Vice-President of India and when the Prime Minister and the then President of the Party, to which I belong, told me in the Parliamentary Board meeting that I was being selected, I was in tears. I did not ask for this. But you know, as a disciplined soldier of the party and as the party had given the mandate, I obliged, and I resigned from the party. There were tears not because of my shirking the responsibility but because I had to leave the party which had given me all this. That was the occasion. Otherwise, there was no problem at all. I did my best to maintain the dignity of the House and I tried to accommodate all sides -- South, North, East, West and North-East. I tried to give opportunity to all sides of the House. I might not have given them enough time that they wanted but each one of you have been given time, whether it is Zero Hour or Special Mentions or Question Hour or discussion and debates on the Bills. People want the House to Discuss, Debate and Decide -- 3Ds. They do not want the other D, that is, Disrupt. Members always say, 'Please do not pass the Bill in the din'. I do agree. वह शोभा नहीं देता। For that, simple solution is that do not create din and do not pass the Bill in the din. This is my advice to all and also for the future because whoever is going to occupy the Chair will have to follow the precedents and go by the decisions taken earlier.

Of course, I will speak separately regarding normal feeling about politicians and all. I don't want to utilize this forum. The respect is declining everywhere because value systems are declining. Keep that in mind and try to do your bit while committing yourself to your ideological line. But see to it that the democratic principles and the standards set by our great people are followed. I am not of that type as people often talk, है तो precedent, नहीं तो dissident and otherwise, resident. ये तीनों मैं करने वाला नहीं हूं। I never asked for precedent, never became a dissident or never confined to residence. I will be moving around -- going around, meeting, greeting and talking to you all on larger issues. I will not get into politics, as I told you. We are all working in our own ways. We are not enemies; we are rivals. We must work hard to outshine each other like competitors but not to run down each other. This is my last advice to all of you. My wish is, Parliament functions well. There are many Members who are very good speakers when given opportunities. I see even the new Members coming prepared and making great contribution. Brilliant speeches are made. Sometimes, brilliance is lost because of disturbances. Unfortunately, in our country, the weakness is that the media also does not report if you speak constructively. If you speak obstructively and do something unusual, it gets coverage. It is the weakness of the media, and media should get out of it at the earliest without trying to give some reasons here and there.

Friends, language is quite dearer to me. I am happy that the President, the Prime Minister, the Chief Justice are speaking in not the same language but in the same vein on respecting our respective mother tongues. First mother tongue, afterwards brother tongue or any other tongue, no problem. But, primacy should be given to mother tongue. Please encourage mother tongue in your respective areas. I would like to see in my lifetime that the Parliament, the Assemblies and also the school, college, university, vocational courses and also the administration, everything should be carried in their respective State official languages and there can be translation. There should be translation. I told the Secretariat and I am telling you all today, before I leave, there has to be a permanent mechanism. I will come to sign that file on 10th Morning. I told them whether the House is there or not that for all speeches, translation should be made available, not at request even otherwise also. That is the process that has to start. The proceedings of this and the administration also, and also, I want to the see the arguments in courts, district courts, High Courts and Supreme Court, also in respective Indian languages and the judgements are also delivered. It is because, I do not want to use the word, 'litigant', people who come to the courts, they do not know English. They will not be able to understand the judgements. So, it should be. But it will take time, I am aware of it. An honest beginning has to be made, and we all should move in the direction and having communication in our respective mother tongues, that is, encourage Indian languages.

Friends, I would like to conclude with a hope that we move forward. I am thankful to the hon. Prime Minister who has given me love and affection. I am thankful to all the Ministerial colleagues who have all responded to my queries any time for consultation on larger developmental issues. Also, I would like to thank the Leader of the Opposition and other leaders on this side who have cooperated with me and also the Members from different political parties who have given a helping hand and who have all today participated in the discussion and said so many good things about me. Thank you very much. I am really moved by your love and affection. धन्यवाद, नमस्कार।

MR. CHAIRMAN: We will take up the Legislative Business, the Central Universities (Amendment) Bill, 2022, Shri Ashwini Vaishnaw.